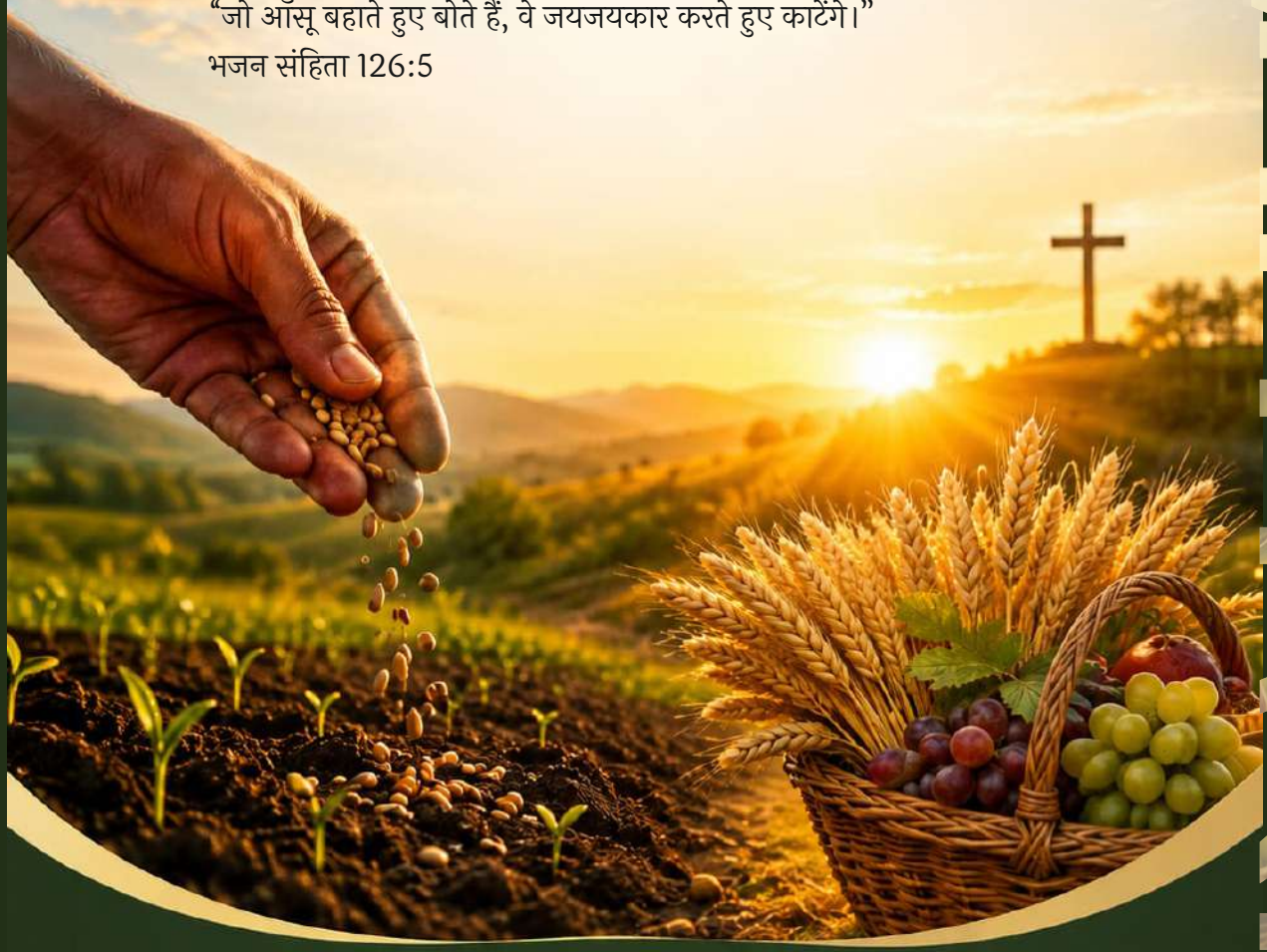
यूनाइटेड बासेल मिशन चर्च काउंसिल, मुंबई

बासेल दर्पण

फसल पर्व संस्करण – 2026

विश्वास में बोना, आनन्द में काटना

"जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए काटेंगे।"
भजन संहिता 126:5



FAITHFUL SOWING IN GOD'S WORD

TRUSTING HIS PERFECT PLAN

ABUNDANT FRUIT THROUGH GRACE

TO GOD BE THE GLORY & JOY

www.ubmchurches.com

सितंबर 2026

अंक 19

बासेल क्रॉनिकल्स · फसल पर्व संस्करण 2026

यू.बी.एम.सी. पदाधिकारी

यूनाइटेड बासेल मिशन चर्च काउंसिल, मुंबई

यू.बी.एम.सी. पदाधिकारी

अध्यक्ष: श्री विशाल शिरी

उपाध्यक्ष: श्रीमती अल्मा ज़ेवियर

सचिव: श्रीमती मेबल सोअन्स

सहायक सचिव: श्री रोहन डेंसन माबेन

कोषाध्यक्ष: श्री सैमुअल रिचर्ड सोअन्स

संयुक्त कोषाध्यक्ष: श्री नवीन कारकड़ा

संपादक

रेव. सुनील जॉय

संपादकीय विभाग

रेव. सुनील जॉय

रेव. जयंत रोच

रेव. जॉन एलाइज़र

रेव. सैमुअल मैकलिन आनंदा

रेव. सैम मुनि

आउटरीच विभाग

रेव. वासु पॉल

रविवार स्कूल विभाग

रेव. जयंत रोच

महिला विभाग

रेव. सैमुअल तंगिरी

युवा विभाग

रेव. जॉन एलाइज़र

संगीत विभाग

रेव. सैमुअल मैकलिन आनंदा

रेव. सुशील बी. सुमित्रा

कन्नड़ अनुवाद

रेव. सैमुअल मैकलिन आनंदा

रेव. जॉन एलाइज़र

रेव. सुनील जॉय

हिंदी अनुवाद

रेव. जयंत रोच

श्रीमती रेणुका रोच

कन्नड़ प्रूफ रीडिंग

रेव. सुनील जॉय

रेव. सैमुअल मैकलिन आनंदा

रेव. जॉन एलाइज़र

हिंदी प्रूफ रीडिंग

रेव. जयंत रोच

श्रीमती रेणुका रोच

कला निर्देशक

श्री एन्स्टी कारकड़ा

विषय-सूची

1 संपादकीय
रेव. सुनील जॉय
यू.बी.एम. शालोम चर्च, नवी मुंबई

2 पदाधिकारियों का पृष्ठ
श्री विशाल शिरी
अध्यक्ष, यू.बी.एम.सी., मुंबई

3 पादरी का संदेश
रेव. इयान आइमन
यू.बी.एम. क्रिस्ता महिमा चर्च, वसई

4 आज का धर्मशास्त्र
रेव. डॉ. आर. एनी वॉटसन
कर्नाटक थियोलॉजिकल कॉलेज, मंगलुरु

5 आज की आध्यात्मिकता
रेव. डॉ. संदीप थियोफिल
एसोसिएट प्रोफेसर, के.टी.सी., मंगलुरु

6 आज का नेतृत्व
रेव. सुशील सुमित्रा
यू.बी.एम. क्रिस्ता कृपा चर्च, चेंबूर

7 माकारियोस
रेव. रॉबिन गारज़र
ई.सी.आई. चर्च, तलोजा, नवी मुंबई

8 पारूसिया
रेव. गॉडफ्रे सोअन्स
यू.बी.एम. सुशांति चर्च, भायखला

9 मिशनरी की कहानी
रेव. जॉन एलाइज़र
यू.बी.एम. क्रिस्ता कांति चर्च, कुर्ला

IO कलीसियाओं का पृष्ठ
श्रीमती यूनिस सोअन्स
यू.बी.एम. क्राइस्ट ज्योति चर्च, ठाणे

II रिपोर्ट एवं तस्वीरें



संपादकीय

रेव. सुनील जॉय
यू.बी.एम. शालोम चर्च, नवी मुंबई

"विश्वास में बोना, आनन्द में काटना"

फसल का पर्व प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण दिन है, विशेषकर किसानों के लिए, क्योंकि यह उनके लिए बड़े आनन्द का दिन होता है। पूरे वर्ष किसान भूमि में बीज बोता है, बीज के बढ़ने के लिए मेहनत करता है और खेत में अनेक कठिनाइयों को सहन करता है। जब फसल बढ़ती है और उसे काटने का समय आता है, तब किसान के हृदय में बहुत आनन्द होता है।

किसान यह जानकर आनन्दित होता है कि उसकी मेहनत का फल मिला है और परमेश्वर ने उसकी मेहनत को आशीष देकर उसे फसल प्रदान की है। आज, मसीही होने के नाते, हमें भी इस फसल पर्व की आराधना में आनन्दित और प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि पूरे वर्ष परमेश्वर ने हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा किया है। हमें परमेश्वर के प्रावधान को स्मरण करना चाहिए और उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। इसी कारण हम आज के दिन को फसल पर्व के रूप में मना रहे हैं।

परमेश्वर के प्रावधान का अनुभव करने से पहले हममें विश्वास होना आवश्यक है। हमें ऐसे लोग होना चाहिए जो परमेश्वर, उसके कार्यों और विशेष रूप से उसके प्रावधान पर भरोसा करते हैं। जब किसान अपने खेत में बीज बोता है, तो वह उसे विश्वास के साथ बोता है। यही विश्वास उसकी आशा बन जाता है। हम जो कुछ भी करते हैं, उसकी शुरुआत विश्वास से होनी चाहिए।

इस वर्ष हमारे फसल पर्व का मुख्य विषय है: "विश्वास में बोना, आनन्द में काटना" — भजन संहिता 126:5। आइए विचार करें कि हम विश्वास में कैसे बो सकते हैं और आनन्द के साथ कैसे काट सकते हैं।

विश्वास में बोना

भजन संहिता 126:5 कहता है: "जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए काटेंगे।" यहाँ भजनकार हमें स्मरण कराता है कि इस संसार में रहते हुए और परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारियों को निभाते हुए हमें विश्वास, धैर्य, त्याग और आशा का जीवन जीना चाहिए।

यदि हम इस संसार में विश्वास के साथ जीवन बिताएँ और परमेश्वर की सेवा तथा उसके द्वारा दी गई जिम्मेदारियों को पूरा करें, तो हम अच्छे परिणाम देख पाएँगे।

जब किसान पहली बार भूमि में बीज बोता है, तो वह विश्वास और आशा के साथ ऐसा करता है। वह यह आशा रखता है कि आज बोया गया बीज भविष्य में बढ़ेगा और फल उत्पन्न करेगा। वह इस बात की चिंता किए बिना कि बीज से अच्छा फल

निकलेगा या बुरा, पूरे विश्वास के साथ उसे बोता है।

किसान परमेश्वर पर भरोसा करता है और अपनी भूमि पर भी विश्वास रखता है, और इस आशा के साथ प्रतीक्षा करता है कि उसे फसल प्राप्त होगी।

आज मसीहियों का जीवन भी ऐसा ही है। हमें परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारियों को विश्वासयोग्यता से पूरा करना चाहिए। सबसे बढ़कर, इस अस्थायी संसार में रहते हुए हमें प्रत्येक दिन विश्वास के द्वारा जीवन जीना चाहिए।

जब हम बीज बोते हैं, तो हमें यह पता नहीं होता कि भविष्य में उससे किस प्रकार का फल उत्पन्न होगा। उसी प्रकार जब हम परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा रखते हैं, तो हो सकता है कि हमें अपने विश्वास का परिणाम तुरंत दिखाई न दे।

इसीलिए पौलुस 2 कुरिन्थियों 5:7 में हमें बताता है कि हमें दृष्टि से नहीं, बल्कि विश्वास से चलना चाहिए। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हो सकता है कि हमें तुरंत उत्तर दिखाई न दे। उसी प्रकार हम अपने जीवन में तुरन्त परिवर्तन नहीं ला सकते और न ही तुरन्त अपने लिए एक बेहतर भविष्य बना सकते हैं। हमें धैर्य और विश्वास के साथ परमेश्वर के ठहराए हुए समय, उसके उत्तर और विशेष रूप से उसके आश्चर्यजनक कार्य की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

“मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।” — 1 कुरिन्थियों 3:6। इस वचन के द्वारा पौलुस हमें स्मरण कराता है कि हमें प्रतिदिन परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारियों को विश्वासयोग्यता से पूरा करना चाहिए। इस संसार में रहते हुए, काम करते हुए और निर्णय लेते हुए हमें सब कुछ विश्वास के साथ करना चाहिए। यदि हम सब कुछ विश्वास में करते हैं, तो परमेश्वर स्वयं हमें उसके फल से आशीष देगा।

आज विश्वास में बीज बोइए, भले ही आपको कल उसका फल दिखाई न दे। बीज इसलिए बोइए क्योंकि परमेश्वर आपकी मेहनत और आपके आँसुओं को देखता है। हमारा परमेश्वर उस दिन और उस समय भरपूर फसल देने में सक्षम है जिसे उसने ठहराया है।

आनन्द से काटना

कठिनाइयाँ और आँसू हमारी कहानी का अन्त नहीं हैं। बल्कि यदि हम कठिन जीवन के बीच भी विश्वास के द्वारा जीवन जीते हैं, तो हम आनन्द के क्षणों का अनुभव कर सकते हैं और भरपूर फसल देख सकते हैं।

हम सभी के जीवन में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। जब हम एक समस्या से बाहर निकलते हैं, तो हो सकता है कि दूसरी समस्या पहले से ही हमारे मार्ग में हमारा इंतजार कर रही हो। अपने दैनिक जीवन में हम सुख, शान्ति और समृद्धि का अनुभव करने के लिए अनेक संघर्षों से गुजरते हैं। इस संघर्षपूर्ण जीवन में कई बार हम हार जाते हैं, गिर पड़ते हैं और निराशा का जीवन जीने लगते हैं।

किसान अपने खेत में बीज बोने के बाद तब तक मेहनत करता रहता है जब तक वह बीज बढ़कर फल उत्पन्न न करे। जब बीज एक पौधा बन जाता है, तो उसे उसकी रक्षा करनी होती है और यह सुनिश्चित करना होता है कि कोई उसे नष्ट न करे। प्रतिदिन उसे पौधे को पानी देना, खाद देना और उसकी देखभाल करनी होती है।

यदि किसान फल का आनन्द लेना या फसल देखना चाहता है, तो उसे धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी होगी और प्रतिदिन अपनी फसल की देखभाल करते रहना होगा। जब वह अपने काम को विश्वासयोग्यता और ईमानदारी से करता है, तो फसल के

समय उसे और भी अधिक आनन्द मिलता है और वह खुशी से अपनी फसल इकट्ठी करता है।

आज हमारा जीवन भी ऐसा ही है। यदि हम अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों को सहन करें, प्रतिदिन साहस के साथ उनका सामना करें और अपने आँसुओं के बीच भी विश्वास में जीवन बिताएँ, तो हम भी अपने जीवन में आनन्द और परमेश्वर के चमत्कारों को देख सकते हैं।

“हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।” — गलातियों 6:9

इसलिए आइए हम अपने जीवन में कभी निराश न हों और न ही हिम्मत हारें। कठिनाइयाँ आने पर भी हम कमजोर न पड़ें और न हार मानें, बल्कि विश्वास में जीवन बिताएँ। तब परमेश्वर द्वारा ठहराए गए दिन हम आनन्द का अनुभव कर सकेंगे।

फसल पर्व का संदेश और चेतावनी

यह फसल पर्व हमें दो प्रकार के संदेश और चेतावनियाँ देता है। पहला, इस फसल पर्व के अवसर पर हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि पूरे वर्ष उसने हमें भोजन, पानी और प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की हैं और हमें बहुतायत से आशीष दी है। इसलिए हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पित करनी चाहिए।

लेकिन यह फसल पर्व हमें एक चेतावनी भी देता है। वह दिन शीघ्र आने वाला है जब हर वह पेड़ जो फल नहीं देता, काट डाला जाएगा। दूसरे शब्दों में, प्रभु का दिन निकट है। यदि हम पश्चात्ताप नहीं करते, धार्मिक जीवन नहीं जीते और अच्छा फल उत्पन्न करने में असफल रहते हैं, तो उस दिन हमें न्याय का सामना करना पड़ेगा।

इसलिए आज ही परमेश्वर की ओर फिरें। अपने पापों को स्वीकार करें, क्षमा प्राप्त करें और ऐसा जीवन जिएँ जिसमें अच्छा फल उत्पन्न हो।

आइए हम इस संसार में प्रत्येक दिन विश्वास के द्वारा जीवन जिएँ। परमेश्वर पर भरोसा करें और अपना कार्य करते रहें। परमेश्वर की सेवा में लगे रहें। तब भविष्य में हम उन बीजों की फसल को आनन्द के साथ काटेंगे जिन्हें हमने विश्वास में बोया है।

इस फसल पर्व पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। परमेश्वर आपके विश्वास को बढ़ाए और आपको बहुतायत से आशीष दे। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा आपके जीवन में शान्ति, सांत्वना और आनन्द प्रदान करें।



पदाधिकारियों का पृष्ठ

श्री विशाल शिरी
अध्यक्ष, यू.बी.एम.सी., मुंबई

मसीह में प्रिय भाइयों और बहनों,

जब हम अपने वार्षिक फसल उत्सव (Harvest Festival) को मनाने के लिए एकत्रित होते हैं, तो हम अपने चारों ओर देखते हैं और हमारे हृदय परमेश्वर की अद्भुत और प्रचुर व्यवस्था के प्रत्यक्ष चिन्हों को देखकर कृतज्ञता से भर जाते हैं।

यह उत्सव केवल एक पारंपरिक आयोजन नहीं है; बल्कि यह उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति अपनी पूर्ण निर्भरता को स्वीकार करने का एक पवित्र अवसर है, जो पृथ्वी और हमारी आत्माओं दोनों को संभालता और पोषित करता है।

पवित्र शास्त्र में बोने और काटने का चक्र गहरा आध्यात्मिक महत्व रखता है। जब हम बीते वर्ष में बोए गए बीजों पर विचार करते हैं—चाहे वे हमारे धन-संसाधनों के रूप में हों, हमारे समय के रूप में हों या हमारी सेवा के कार्यों के रूप में—तो हमें प्रेरित पौलुस द्वारा बताई गई इस आत्मिक शिक्षा की याद आती है: "जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा ही काटेगा और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।" (2 कुरिन्थियों 9:6)

सच्ची प्रचुरता उस इच्छुक और उदार हृदय से शुरू होती है, जो परमेश्वर पर इतना भरोसा करता है कि वह अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा दिए गए आशीषों में से कुछ भाग वापस देने के लिए तैयार रहता है।

फसल का समय धैर्य और दृढ़ता का उत्सव मनाने का भी समय है। आज हम जो आत्मिक उन्नति और आशीषें देखते हैं, वे उस शांत और विश्वासयोग्य परिश्रम का परिणाम हैं, जो फल दिखाई देने से बहुत पहले किया गया था। कभी-कभी ऐसे समय भी आते हैं जब हमें आँसुओं, कठिनाइयों और अनिश्चितताओं के बीच बीज बोना पड़ता है, फिर भी परमेश्वर अपने वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहता है। जैसा कि भजन संहिता 126:5 हमें सुन्दरता से प्रोत्साहित करती है: "जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए काटेंगे।"

यदि आप इस समय प्रतीक्षा या संघर्ष के दौर से गुजर रहे हैं, तो हिम्मत रखिए। प्रभु में आपका परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता। आत्मिक फसल परमेश्वर के सिद्ध समय में निश्चित रूप से प्राप्त होगी।

जब हम अपने सामने रखी हुई परमेश्वर की भरपूरी और प्रचुर व्यवस्था को देखते हैं, तो आइए अपनी दृष्टि बाहर की ओर भी करें। गलातियों 6:9 हमें स्मरण दिलाता है: "हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।"

इस फसल उत्सव के समय हमारा एक महत्वपूर्ण मसीही कर्तव्य यह भी है कि हम अपनी आशीषों को जरूरतमंदों के साथ बाँटें, ताकि मसीह का प्रेम हमारे चर्च की चारदीवारी के भीतर ही नहीं, बल्कि उसके बाहर भी व्यावहारिक रूप से अनुभव किया जा सके।

अंत में, आइए हम अपनी आँखें उस अंतिम और महान फसल पर लगाए रखें—अर्थात् परमेश्वर के राज्य में आत्माओं के एकत्रित होने पर। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: “फसल तो बहुत है, पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो कि वह अपनी फसल काटने के लिए मजदूर भेज दे।” (मत्ती 9:37-38) एक मंडली के रूप में, हम केवल भौतिक फसल को एकत्र करने में ही विश्वासयोग्य न पाए जाएँ, बल्कि जहाँ कहीं भी जाएँ, वहाँ लोगों के हृदयों में उद्धार का संदेश बोने में भी विश्वासयोग्य पाए जाएँ।

मैं आपको और आपके पूरे परिवार को हर्षमय, आशीषित और आत्मिक रूप से चिंतनपूर्ण फसल उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। फसल के प्रभु आपके जीवन को समृद्ध करें, आपके द्वारा बोए गए बीजों को बढ़ाएँ और आपके धर्मी जीवन में भरपूर वृद्धि प्रदान करें।



पादरी का संदेश

रेव. इयान आइमन
यू.बी.एम. क्रिस्ता महिमा चर्च, वसई

"विश्वास में बोना, आनन्द में काटना"

फसल का समय धन्यवाद देने का समय है। जब हम परमेश्वर द्वारा दिए गए आशीषों के लिए धन्यवाद करते हैं, तब हमें एक महत्वपूर्ण आत्मिक सत्य याद दिलाया जाता है: हर फसल एक बीज से शुरू होती है, और हर बीज को बोने के लिए विश्वास की आवश्यकता होती है।

भजन संहिता 126:5 में लिखा है: "जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए काटेंगे।" यह वचन हमें याद दिलाता है कि हमारे विश्वास की यात्रा में त्याग, प्रतीक्षा, अनिश्चितता और यहाँ तक कि आँसू भी हो सकते हैं। फिर भी जब हम विश्वासयोग्य बने रहते हैं, तो परमेश्वर अपने उचित समय में हमें फसल प्रदान कर सकता है।

इस फसल के मौसम में आइए हम SEED (बीज) शब्द से तीन महत्वपूर्ण आत्मिक सत्यों पर विचार करें।

S – विश्वास में बोएँ (SOW IN FAITH)

एक किसान बीज बोता है, यद्यपि वह तुरन्त यह नहीं देख सकता कि मिट्टी के नीचे क्या हो रहा है। वह विश्वास करता है कि उचित समय पर बीज बढ़ेगा।

विश्वास भी कुछ ऐसा ही है। हम बिना तुरन्त उत्तर देखे प्रार्थना करते हैं। हम हमेशा परिणाम देखे बिना सेवा करते हैं। हम यह जाने बिना देते हैं, प्रोत्साहित करते हैं, सिखाते हैं, क्षमा करते हैं और प्रेम करते हैं कि हमारे कार्यों का क्या प्रभाव पड़ेगा।

एक कलीसिया के रूप में, सेवा का प्रत्येक कार्य एक बीज है। जब हम अपने बच्चों को सिखाते हैं, बीमारों से मिलने जाते हैं, निराश लोगों को प्रोत्साहित करते हैं, जरूरतमंदों की सहायता करते हैं, मिलकर आराधना करते हैं और परमेश्वर के कार्य के लिए देते हैं, तब हम बीज बो रहे होते हैं।

गलातियों 6:9 हमें प्रोत्साहित करता है: "हम भलाई करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।"

छोटी शुरुआत को तुच्छ न समझें। विश्वासयोग्यता से बीज बोते रहें, क्योंकि परमेश्वर हर बीज को देखता है।

E – आँसुओं के बीच धीरज धरें (ENDURE THROUGH TEARS)

भजन संहिता 126 यह नहीं कहता कि बीज बोना हमेशा आसान होगा। वह कहता है कि कुछ लोग "आँसू बहाते हुए बोएँगे।" जीवन में ऐसे समय आते हैं जब परिस्थितियों की मिट्टी बहुत कठोर लगती है। हम चंगाई, पुनर्स्थापना, प्रावधान, मेल-

मिलाप या किसी बड़ी सफलता के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, फिर भी उत्तर में देर दिखाई दे सकती है। कभी-कभी हम सोचने लगते हैं कि क्या हमारी प्रार्थनाओं और प्रयासों का कोई परिणाम हो रहा है।

लेकिन आँसू इस बात का प्रमाण नहीं हैं कि परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है। यीशु स्वयं लाजर की कब्र पर रोए थे। फिर भी कहानी आँसुओं पर समाप्त नहीं हुई। उनके आँसुओं के बाद पुनरुत्थान का चमत्कार हुआ। इसी प्रकार, हमारे आँसू हमारी कहानी का एक हिस्सा हो सकते हैं, लेकिन उन्हें हमारी कहानी का अन्त नहीं होना चाहिए।

जब हम यह नहीं देख पाते कि परमेश्वर क्या कर रहा है, तब भी हम इस बात पर भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर कौन है। प्रतीक्षा के मौसम में विश्वासयोग्य बने रहना हमारी जिम्मेदारी है। बीज मिट्टी के नीचे छिपा हो सकता है, लेकिन परमेश्वर अभी भी कार्य कर रहा है।

E – परमेश्वर की फसल की आशा रखें (EXPECT GOD'S HARVEST)

पौलुस 1 कुरिन्थियों 3:6 में लिखता है: "मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।" हम बीज बोते हैं। हम सींचते हैं। हम परिश्रम करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं। लेकिन अन्ततः बढ़ोतरी परमेश्वर ही देता है।

हमारे द्वारा बोई गई चीजों के पूरे परिणाम को हम हमेशा नहीं देख पाते। माता-पिता की प्रार्थनाएँ वर्षों बाद उनके बच्चों के जीवन को प्रभावित कर सकती हैं। एक शिक्षक के शब्द किसी विद्यार्थी के भविष्य को आकार दे सकते हैं। दया का एक छोटा-सा कार्य किसी व्यक्ति के लिए परमेश्वर के प्रेम का पहला अनुभव बन सकता है। एक विश्वासयोग्य सेवकाई उन पीढ़ियों को प्रभावित कर सकती है जिनसे हम शायद कभी मिल भी न पाएँ।

इसलिए जब फसल आने में देर दिखाई दे, तो हम निराश न हों। परमेश्वर का समय हमारे समय के समान नहीं है। बीज को बढ़ने में समय लग सकता है, लेकिन वह परमेश्वर जो जीवन देता है, विश्वासयोग्य है।

D – परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर निर्भर रहें (DEPEND ON GOD'S FAITHFULNESS)

जब हम SEED शब्द को पूरा करते हैं, तो हमें सबसे महत्वपूर्ण सत्य याद आता है: हमारी फसल हमारी शक्ति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर निर्भर करती है।

एक बीज अपने आप में तब तक कुछ नहीं कर सकता जब तक परमेश्वर उसे जीवन और बढ़ने की शक्ति न दे। उसी प्रकार, हमारे प्रयास, हमारी प्रार्थनाएँ और हमारी सेवाएँ तभी फल लाती हैं जब परमेश्वर पर्दे के पीछे कार्य कर रहा होता है।

यीशु ने यूहन्ना 15:5 में कहा: "मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते।" यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर पर निर्भर रहना कमजोरी नहीं, बल्कि बुद्धिमानी है।

जब हम परमेश्वर पर निर्भर करते हैं, तब हम स्वीकार करते हैं कि:

- वही हर आशीष का स्रोत है।
- वही बढ़ोतरी प्रदान करता है।
- वही फसल का निर्धारण करता है।

इसलिए जब हम स्वयं को कमजोर महसूस करें, तब भी हम विश्वास रख सकते हैं, क्योंकि हमारी कमजोरी में परमेश्वर सामर्थी है।

प्रिय कलीसिया, आइए हम निरन्तर: विश्वास में बोते रहें, आँसुओं के बीच धीरज धरें, परमेश्वर की फसल की आशा रखें, और उसकी विश्वासयोग्यता पर निर्भर रहें।

हो सकता है कि हम हमेशा तुरन्त फल न देख पाएँ, लेकिन परमेश्वर की आज्ञाकारिता में बोया गया कोई भी बीज कभी व्यर्थ नहीं जाता।

आज के आँसू कल के आनन्द के गीत बन सकते हैं। आज के त्याग आने वाली पीढ़ियों के लिए आशीष बन सकते हैं। आज की प्रार्थनाएँ परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की कल की गवाही बन सकती हैं।

इसलिए, आइए हम बोते रहें। विश्वास करते रहें। प्रार्थना करते रहें। सेवा करते रहें। भरोसा करते रहें। क्योंकि जिस परमेश्वर के हाथ में बीज है, उसी के हाथ में फसल भी है।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमारा जीवन और हमारी कलीसिया ऐसी उपजाऊ भूमि बन जाए जहाँ विश्वास, प्रेम, आशा, उदारता और परमेश्वर के वचन के बीज निरन्तर बोए जाते रहें। और जब फसल आए, तब हम स्मरण रखें कि सारी महिमा केवल परमेश्वर की है।

“जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए काटेंगे।” — भजन संहिता 126:5



आज का धर्मशास्त्र

रेव. डॉ. आर. एनी वॉटसन
कर्नाटक थियोलॉजिकल कॉलेज, मंगलुरु

प्रस्तावना

'आज का धर्मशास्त्र' (Theology Today) शब्द सुनने में भले ही बहुत सरल लगता हो, लेकिन इसका विषय अत्यंत जटिल और व्यापक है। 'आज के धर्मशास्त्र' से हमारी क्या अपेक्षाएँ हैं? हम केवल इस बात पर चर्चा नहीं कर रहे हैं कि धर्मशास्त्र क्या है, बल्कि यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि हमारे वर्तमान संदर्भ में धर्मशास्त्र परमेश्वर में हमारे विश्वास को समझने में किस प्रकार योगदान दे सकता है। धर्मशास्त्र कभी रुका हुआ पानी नहीं है, बल्कि यह निरंतर बहने और विस्तृत होने वाली धारा है, जो विश्वासियों की अपने-अपने संदर्भों में सहभागिता, चिंतन और अनुभव के अनुसार आगे बढ़ती रहती है। जैसा कि जॉन मैक्वेरी कहते हैं, धर्मशास्त्र वह अध्ययन है जो "धार्मिक विश्वास में सहभागिता और उस पर चिंतन के द्वारा उपलब्ध सबसे स्पष्ट और सुसंगत भाषा में उस विश्वास की विषय-वस्तु को व्यक्त करने का प्रयास करता है।"

जैसा कि 11वीं शताब्दी के कैंटरबरी के आर्चबिशप एन्सेल्म ने कहा, मसीही विश्वास "समझ की खोज करता हुआ विश्वास" (faith seeking understanding) है। इसलिए धर्मशास्त्र अपने तार्किक आयाम और व्यवस्थित पद्धति के द्वारा यह समझने का प्रयास करता है कि कलीसिया क्या विश्वास करती है और क्यों विश्वास करती है—विशेषकर परमेश्वर के उद्धारकारी कार्य के संबंध में। साथ ही, प्रकाशन (revelation) के प्रकाश में परमेश्वर के विषय में विचार-विमर्श के रूप में धर्मशास्त्र विश्वासियों के आध्यात्मिक अनुभव से गहराई से जुड़ा रहता है। यह उन्हें ज्ञान और विवेक प्रदान करता है तथा यीशु मसीह में परमेश्वर की पारलौकिकता को देखने के लिए पोषित करता है। जैसा कि लिखा है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)

परमेश्वर ने अपने पुत्र मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा स्वयं को प्रकट किया। मसीह इस संसार में देहधारण करके आए, जीवित रहे, मरे और संसार के उद्धार के लिए पुनरुत्थित हुए।

इसलिए आज धर्मशास्त्र केवल परमेश्वर के वचन का अध्ययन नहीं है, बल्कि ईश्वरीय प्रकाशन पर तार्किक और संदर्भात्मक चिंतन है। इसी कारण अनेक प्रकार के धर्मशास्त्र सामने आते हैं, क्योंकि परमेश्वर की महानता को किसी एक धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण द्वारा पूरी तरह समझा नहीं जा सकता। फिर भी ये विभिन्न धर्मशास्त्र परमेश्वर के वचन पर केंद्रित रहते हैं और उन विविध संदर्भों में ध्यान देते हैं जहाँ परमेश्वर का अनुग्रह मुक्ति, उद्धार और छुटकारे के लिए असीमित रूप से कार्य करता है।

हमारे हार्वेस्ट उत्सव का विषय "विश्वास में बोना, आनन्द में काटना" (भजन संहिता 126:5) भी हमें इसी प्रकार के धर्मशास्त्रीय चिंतन के लिए आमंत्रित करता है। विश्वास में बोना हमें याद दिलाता है कि विश्वास केवल बौद्धिक स्वीकृति नहीं है, बल्कि संघर्षों, अनिश्चितताओं और जीवन की वास्तविकताओं के बीच परमेश्वर पर जीवित भरोसा रखना है। इसलिए

फसल हमें परमेश्वर के अनुग्रह और उस आनन्द की याद दिलाती है जो तब उत्पन्न होता है जब विश्वास, परिश्रम, आशा और जिम्मेदारी फल उत्पन्न करते हैं।

आज का धर्मशास्त्र – हाशिए पर स्थित लोगों के दृष्टिकोण से

व्यवस्थित धर्मशास्त्र, सैद्धान्तिक धर्मशास्त्र, शास्त्रीय धर्मशास्त्र और डॉग्मैटिक धर्मशास्त्र जैसे पारंपरिक धर्मशास्त्रों के अतिरिक्त, जो कलीसिया के पिताओं, प्रभावशाली समूहों और संस्थागत अधिकारियों द्वारा विकसित किए गए थे, आज हमारे सामने अनेक अन्य धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण हैं।

इनमें मुक्ति धर्मशास्त्र (Liberation Theology), अश्वेत मुक्ति धर्मशास्त्र (Black Liberation Theology), दलित धर्मशास्त्र (Dalit Theology), नारीवादी धर्मशास्त्र (Feminist Theology), वूमनिस्ट धर्मशास्त्र (Womanist Theology/Black Feminist Theology), उत्तर-औपनिवेशिक धर्मशास्त्र (Post-colonial Theology), दिव्यांगता धर्मशास्त्र (Disability Theology), आदिवासी समुदायों का धर्मशास्त्र (Theology of Indigenous Communities), LGBTQ+ धर्मशास्त्र और पर्यावरणीय धर्मशास्त्र (Eco-environmental Theology) आदि शामिल हैं।

इन धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोणों को हाशिए पर रखे गए और उत्पीड़ित समूहों ने अपने ऐतिहासिक संघर्षों के आधार पर व्यक्त और विकसित किया है। इन संघर्षों पर उपनिवेशवाद, जातिगत उत्पीड़न, नस्लवाद, पितृसत्ता, आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक दमन, प्रकृति का विनाश और पर्यावरणीय क्षति जैसी परिस्थितियों का प्रभाव रहा है।

आज हम केवल उत्तर-आधुनिक विज्ञान, तकनीकी प्रगति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के युग में ही नहीं हैं, बल्कि ऐसे युग में भी हैं जहाँ जीवन को खतरे में डालने वाले युद्ध और मानव जाति के विनाश की संभावना मौजूद है।

विज्ञान और तकनीक जिन्हें जीवन के संरक्षण और विकास के लिए उपयोग किया जाना था, वे मानव के स्वार्थ, अहंकार, गर्व, नियंत्रण की इच्छा, दूसरों पर प्रभुत्व स्थापित करने और बिना सीमा के संसाधनों को जमा करने के कारण व्यापक विनाश का कारण बन रहे हैं।

हमारे भारतीय संदर्भ में कलीसिया धार्मिक बहुलवाद, जाति, वर्ग, लिंग और आर्थिक असमानता, राजनीतिक ध्रुवीकरण, धर्मनिरपेक्ष वैश्वीकरण, तकनीकी परिवर्तन और AI के युग के बीच अस्तित्व रखती है।

इसलिए हमारा धर्मशास्त्र केवल पश्चिमी मॉडलों या पारंपरिक शास्त्रीय धर्मशास्त्रों की नकल नहीं कर सकता। कोई एक सार्वभौमिक धर्मशास्त्र नहीं है। हमारे धर्मशास्त्र को हमारी भूमि के दर्शन, अंतरधार्मिक संवाद, आदिवासी संस्कृतियों, लैंगिक और सामाजिक-आर्थिक न्याय, पर्यावरणीय चिंताओं, सार्वजनिक समझ तथा उन वास्तविक परिस्थितियों से जुड़ना चाहिए जिनमें लोग जीवन जीते हैं।

यह लोगों के जीवन और उनके संघर्षों में सहभागिता है, क्योंकि परमेश्वर का वचन—पवित्र शास्त्र—समुदाय के जीवित अनुभवों और वास्तविकताओं से मिलता है।

इस अर्थ में "विश्वास में बोना, आनन्द में काटना" को हाशिए पर स्थित लोगों के दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है। बोने में संघर्ष, बलिदान, आँसू और धैर्य शामिल हो सकते हैं, जबकि फसल का आनन्द आशा, पुनर्स्थापना, न्याय, गरिमा और भरपूर जीवन की ओर संकेत करता है।

इसलिए आज का धर्मशास्त्र यह पूछता है कि हमारा विश्वास लोगों और सारी सृष्टि के जीवन में ऐसी फसल लाने के परमेश्वर के कार्य में किस प्रकार सहभागी हो सकता है।

इसीलिए धर्मशास्त्रीय स्रोतों—पवित्र शास्त्र, परंपरा और अनुभव—की व्याख्या करने की पद्धति, अर्थात् हरमेन्युटिक्स (Hermeneutics), हाशिए पर स्थित लोगों के दृष्टिकोण से संदर्भात्मक बन जाती है। इनमें गरीब, महिलाएँ, उपनिवेशित लोग, नस्लीय अल्पसंख्यक, आदिवासी समुदाय, LGBTIQ+ समुदाय तथा हमारी पृथ्वी और उसका पर्यावरण जैसे बहिष्कृत समुदाय शामिल हैं।

आज पृथ्वी को नया गरीब और हाशिए पर रखा गया अस्तित्व माना जा सकता है। उत्तर-आधुनिक विकास की धारणाओं, विज्ञान और तकनीक के कारण वह विलुप्ति के खतरे में है। हमारी विकास योजनाओं और जीवनशैली ने केवल मानव समुदाय के जीवन को ही नहीं, बल्कि पृथ्वी के समुदाय को भी अत्यधिक क्षति पहुँचाई है और उसके जैविक संतुलन को नष्ट किया है।

हाशिए पर स्थित लोगों के अनुभव से धर्मशास्त्र की पुनर्व्याख्या

इसलिए हमें इन हाशिए पर स्थित और उत्पीड़ित समुदायों के अनुभवों के माध्यम से धर्मशास्त्रीय स्रोतों को फिर से पढ़ने और उनकी पुनर्व्याख्या करने की आवश्यकता है। ऐसा करते हुए हम उन प्रभावशाली और पितृसत्तात्मक व्याख्याओं को चुनौती देते हैं जो स्वयं को तटस्थ और सार्वभौमिक बताती हैं, लेकिन अक्सर प्रभावशाली और अधिकार रखने वाले अभिजात वर्ग द्वारा निर्मित होती हैं।

उत्पीड़न का अनुभव प्रकाशन का एक स्थान बन जाता है; गवाही धर्मशास्त्रीय पद्धति बन जाती है; और पीड़ा परमेश्वर के प्रकट होने का स्थान बन जाती है।

आज का धर्मशास्त्र यह पहचानता है कि हाशियाकरण जाति, नस्ल, वर्ग, लिंग, दिव्यांगता और लैंगिकता के विभिन्न स्तरों पर एक साथ कार्य करता है। इसलिए यह उन पवित्र ग्रंथों और परंपराओं की आलोचनात्मक जाँच करता है जो उत्पीड़न को उचित ठहराते हैं, और साथ ही उनमें मौजूद मुक्ति देने वाले तत्वों को पुनः सामने लाता है।

आज का धर्मशास्त्र पवित्र शास्त्र को मुक्ति के ग्रंथ के रूप में पुनः स्थापित करता है, परंपरा को उसके ऐतिहासिक संदर्भों में समझता है और जीवित अनुभव को धर्मशास्त्र के एक वैध स्रोत के रूप में महत्व देता है। यह हमें न्याय और गरिमा की सेवा करने के लिए बुलाता है।

इस प्रकार आज धर्मशास्त्र केवल शास्त्रीय व्याख्या (exegesis) तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्याख्यात्मक प्रतिरोध (interpretive resistance) भी है, जो धर्मशास्त्र को अधिक नैतिक, समावेशी और परिवर्तनकारी बनाता है।

समापन

आज विभिन्न धर्मशास्त्र "गरीबों के प्रति प्राथमिकता" (preferential option for the poor) के दृष्टिकोण से व्यक्त किए जाते हैं। यह विचार विशेष रूप से मुक्ति धर्मशास्त्र से जुड़ा हुआ है।

दूसरे शब्दों में, यह हाशिए पर स्थित लोगों की जीवित वास्तविकताओं के माध्यम से धर्मशास्त्रीय स्रोतों की पुनर्कल्पना, पुनर्पाठ और पुनर्व्याख्या है, ताकि उत्पीड़ित लोगों के साथ न्याय और एकजुटता की पुनः पुष्टि की जा सके। इसमें निर्गमन,

भविष्यद्वक्ताओं और उत्पीड़ितों के साथ यीशु की एकजुटता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

साथ ही, यह परमेश्वर की आराधना करने वाले समुदाय को सामाजिक जिम्मेदारी, सृष्टि की देखभाल, न्याय और करुणामय सेवकाई के लिए बुलाता है।

इसी संदर्भ में हमारे हार्वेस्ट उत्सव का विषय "विश्वास में बोना, आनन्द में काटना" (भजन संहिता 126:5) और भी गहरा धर्मशास्त्रीय अर्थ प्राप्त करता है।

भजन कहता है कि आँसुओं के साथ बोने वाले आनन्द के गीतों के साथ काटेंगे। यह हमें याद दिलाता है कि विश्वासयोग्य बोआई अक्सर कठिन परिस्थितियों में होती है, लेकिन परमेश्वर अपने समय में आशा और फलदायकता प्रदान करता है।

इसलिए हमारी मसीही बुलाहट है कि हम विश्वास, न्याय, प्रेम, शान्ति, करुणा और जिम्मेदार देखभाल के बीज बोएँ, और फसल के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें।

उदाहरण के लिए, जब हम हार्वेस्ट उत्सव मनाते हैं, तो आज का धर्मशास्त्र हमसे क्या कहता है? क्या यह केवल धन्यवाद की आराधना, उसके बाद नीलामी, खेल और सामूहिक भोजन का अवसर है? या फिर यह परमेश्वर की सृष्टि, प्रकृति और मनुष्य की जिम्मेदारियों पर धर्मशास्त्रीय रूप से चिंतन करने और स्वयं को उस पृथ्वी और पर्यावरण का जिम्मेदार संरक्षक बनाने का अवसर है जिस पर हम रहते हैं और जिस पर हमारा अस्तित्व निर्भर है—और जिसके बिना कोई जीवन संभव नहीं है?

पृथ्वी की देखभाल और हमारी जिम्मेदारी

पृथ्वी और उसमें जो कुछ है, वह सभी जीवित प्राणियों के लिए—जानवरों और प्रकृति सहित—परमेश्वर का उपहार है।

फिर भी मनुष्य, जिसे परमेश्वर ने अपने स्वरूप और समानता में बनाया है, उसने इस वचन को गलत समझ लिया: "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसे अपने वश में करो।" (उत्पत्ति 1:28) मनुष्य ने इसे पृथ्वी पर प्रभुत्व करने की आज्ञा के रूप में समझा, जबकि इसे पृथ्वी की देखभाल करने और उसके भण्डारी बनने की जिम्मेदारी के रूप में समझना चाहिए था।

परिणामस्वरूप हमने पृथ्वी और उसके संसाधनों पर प्रभुत्व स्थापित किया और पृथ्वी तथा उसके पर्यावरण को नष्ट करने वाले बन गए। आधुनिक विज्ञान, कृषि और औद्योगिक तकनीकों के अत्यधिक और अविवेकपूर्ण उपयोग के कारण हमारा एकमात्र निवास स्थान तेजी से अपरिवर्तनीय क्षति की ओर बढ़ रहा है।

आज पर्यावरणीय संकट तत्काल नैतिक जिम्मेदारी और कार्रवाई की माँग करता है ताकि विनाश को रोका जा सके।

यदि हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर इस ब्रह्माण्ड और इसमें मौजूद प्रत्येक वस्तु के सृष्टिकर्ता हैं, तो हमें सृष्टि में अपनी भूमिका को समझना और उसी के अनुसार विश्वास तथा सेवा के साथ उनके अधिकार के अधीन जीवन जीना आवश्यक है। हम उनके Oikos में रहते हैं—अर्थात् सृष्टि परमेश्वर का घर है।

इसलिए हार्वेस्ट केवल उस फल को प्राप्त करने के बारे में नहीं है जो हमने बोया है। यह हमसे यह पूछने का अवसर भी है कि आज हम किस प्रकार के बीज बो रहे हैं। क्या हम विनाश के बीज बो रहे हैं या जीवन के? क्या हम शोषण के बीज बो रहे हैं या न्याय और देखभाल के?

विश्वास के लोगों के रूप में हमें जिम्मेदारी से बोने के लिए बुलाया गया है और ऐसी फसल के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने

के लिए बुलाया गया है जो केवल मानवता ही नहीं, बल्कि पूरी सृष्टि के लिए आनन्द लेकर आए।

इस प्रकार परमेश्वर का ज्ञान संबंधों, देखभाल, अस्तित्व की रक्षा और प्रतिरोध के माध्यम से प्राप्त होता है। यह संबंधपरक, मुक्तिदायक और हमारे बीच सबसे छोटे तथा कमजोर लोगों के प्रति उत्तरदायी है।

धर्मशास्त्र संघर्ष और आशा में जड़ित, निरंतर और सामूहिक विवेक का कार्य बन जाता है। यह केवल सिद्धान्तात्मक, दूरस्थ, अमूर्त और पदानुक्रमात्मक न होकर सहभागी और व्यवहार-केंद्रित (praxis-oriented) है। अतः धर्मशास्त्र कार्य और चिंतन (action-reflection) पर आधारित है।

इसलिए धर्मशास्त्र केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह शिष्यत्व से संबंधित है—उस महान और क्रांतिकारी सुधारक, यीशु मसीह, परमेश्वर के एकलौते पुत्र का अनुसरण करना, जो इस संसार में देहधारण करके आए ताकि 'परमेश्वर के राज्य' की स्थापना हो। ऐसा राज्य जहाँ मानवता सीमाओं, नस्ल, लिंग, वर्ग, जाति और धर्म से परे गहराई से एक-दूसरे से जुड़ी हुई हो—परमेश्वर के एक परिवार के रूप में—और जहाँ न्याय और शान्ति का शासन हो।

इस संसार में परमेश्वर के मिशन में सहभागी होना परमेश्वर के विश्वासयोग्य समुदाय की जिम्मेदारी है।

जब हम हार्वेस्ट मनाते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि हमें विश्वास में बोने के लिए बुलाया गया है—ऐसा विश्वास जो प्रेम, न्याय, सृष्टि की देखभाल, करुणा और आशा के द्वारा व्यक्त होता है—और हमें उस फसल के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना है जो आनन्द लेकर आती है।

भजन संहिता 126:5 हमें याद दिलाता है कि जब बोआई आँसुओं के साथ भी होती है, तब परमेश्वर हमारे विश्वासयोग्य परिश्रम को आनन्द की फसल में बदल सकते हैं।

आज का धर्मशास्त्र हमें केवल इस विश्वास को समझने के लिए नहीं, बल्कि इसे जीने, अपने जीवन में उतारने और संसार में परमेश्वर के नवीनीकरण के कार्य में सहभागी होने के लिए बुलाता है।



आज की आध्यात्मिकता

रेव. डॉ. संदीप थियोफिल
एसोसिएट प्रोफेसर, के.टी.सी., मंगलुरु

डिजिटल मंच से जीवन के व्यवहार तक

आज आध्यात्मिकता की बात करने का क्या अर्थ है? प्रत्येक पीढ़ी एक विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में जीवन जीती है, और मसीही आध्यात्मिकता अपने समय के प्रश्नों, संघर्षों, आशाओं और संभावनाओं से प्रभावित होती है। हमारा "आज" तीव्र तकनीकी परिवर्तन, डिजिटल संचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्वीकरण, प्रवासन, पर्यावरणीय संकट, आर्थिक असमानताओं तथा बढ़ते सामाजिक और राजनीतिक विभाजनों से चिह्नित है। ये वास्तविकताएँ केवल हमारे बाहर की चीज़ें नहीं हैं; वे हमारे सोचने, एक-दूसरे से संबंध रखने, अपनी पहचान बनाने तथा जीवन और विश्वास को समझने के तरीके को प्रभावित करती हैं।

"मंच" (Platform) शब्द इस बदलते संदर्भ को समझने में हमारी सहायता करता है। मंच एक ऐसा डिजिटल स्थान है जिसके माध्यम से हम संसार से जुड़ते और उसका सामना करते हैं। भारत में बहुत से युवाओं के लिए Instagram, YouTube, WhatsApp, Snapchat और Telegram संचार, सीखने, संबंध बनाने, आत्म-अभिव्यक्ति तथा विभिन्न संस्कृतियों और विश्वासों से जुड़ने के दैनिक माध्यम बन गए हैं। ये केवल साधन नहीं रह गए हैं; वे धीरे-धीरे यह भी निर्धारित करते हैं कि हम क्या देखते हैं, किनकी आवाज़ें सुनते हैं और दूसरों के साथ कैसे संबंध रखते हैं।

आज हम पहले से अधिक जुड़े हुए हैं, फिर भी अक्सर अधिक विभाजित हैं; हमारे पास जानकारी तक अधिक पहुँच है, फिर भी सत्य को पहचानने में कठिनाई होती है; हम अधिक विविधता का सामना करते हैं, फिर भी अधिक ध्रुवीकृत हो सकते हैं। इस संदर्भ में आध्यात्मिकता को केवल निजी प्रार्थना या व्यक्तिगत भक्ति तक सीमित नहीं किया जा सकता। आध्यात्मिकता को उन शक्तियों को पहचानने में हमारी सहायता करनी चाहिए जो हमारे जीवन को प्रभावित कर रही हैं और हमें उनके प्रति विश्वासयोग्य ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए तैयार करना चाहिए।

इसके केंद्र में परमेश्वर के साथ संगति में जीवन बिताना और उस संगति को पूरे जीवन को आकार देने देना है। यीशु मसीह अपने जीवन के द्वारा इस मार्ग को दिखाते हैं—पिता पर गहरे विश्वास के द्वारा, लोगों के साथ अपने संबंधों के द्वारा, सामाजिक और धार्मिक सीमाओं को पार करने के द्वारा, अन्याय को चुनौती देने के द्वारा, बहिष्कृत लोगों का स्वागत करने के द्वारा और मानवीय पीड़ा के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के द्वारा। इस प्रकार, मसीही आध्यात्मिकता परमेश्वर के साथ जीवन और संसार के साथ सक्रिय सहभागिता—दोनों को एक साथ रखती है।

जब विश्वास को ठोस वास्तविकताओं के भीतर समझा और जिया जाता है—जब हम अपने संदर्भ को समझते हैं, उसे सुसमाचार के प्रकाश में परखते हैं और विश्वासयोग्य कार्य के द्वारा प्रतिक्रिया देते हैं—तब आध्यात्मिकता "व्यवहारिक जीवन" (Praxis) बन जाती है।

इसलिए "मंच से व्यवहार तक" केवल तकनीक से कार्य की ओर जाने की प्रक्रिया नहीं है। यह उस संसार को, जैसा हम उसे देखते और अनुभव करते हैं, उस संसार की ओर ले जाने की यात्रा है जिसमें मसीह के शिष्यों के रूप में हमें सक्रिय रूप से सहभागी होने के लिए बुलाया गया है। इसका ठोस रूप न्याय, संवाद और एकजुटता में दिखाई देता है।

मसीह में जड़ें जमाई हुई आध्यात्मिकता हमें यह पहचानने में सक्षम बनाती है कि क्या मानव गरिमा को नकारता है, विभिन्नताओं का नम्रता के साथ सामना करती है और पीड़ितों के साथ खड़ी होती है। इस अर्थ में विश्वास जीवन की वास्तविकताओं में बोए गए बीज के समान है। जैसा कि भजन 126:5 हमें स्मरण कराता है, "जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए काटेंगे।"

मसीही आध्यात्मिकता हमें तब भी विश्वासयोग्यता से बोते रहने के लिए आमंत्रित करती है जब उसका फल तुरंत दिखाई नहीं देता। इसलिए प्रश्न केवल यह नहीं है कि हमारी आध्यात्मिकता हमारे लिए क्या करती है, बल्कि यह भी है कि हमारी आध्यात्मिकता हमें संसार में किस प्रकार के मनुष्य बनाती है।

आध्यात्मिकता और न्याय

डिजिटल मंच केवल उन अन्यायों के स्वरूप को प्रभावित नहीं करते जिनका हम सामना करते हैं, बल्कि यह भी प्रभावित करते हैं कि हम किन बातों पर ध्यान देते हैं और किन्हें अनदेखा कर देते हैं। हम संसार भर की घटनाओं को देख सकते हैं और फिर भी अपने आसपास क्या हो रहा है, उससे अनजान रह सकते हैं। जानकारी, मनोरंजन और चित्रों का लगातार प्रवाह पीड़ा को हमारे लिए सामान्य बना सकता है, लेकिन आवश्यक नहीं कि वह हमें प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करे।

फिर भी यही डिजिटल मंच न्याय और कार्यवाही के लिए स्थान बन सकते हैं। हमारे युवा Instagram, YouTube, WhatsApp और अन्य डिजिटल नेटवर्क का उपयोग भेदभाव, पर्यावरणीय चिंताओं, हिंसा और हाशिये पर रहने वाले समुदायों के संघर्षों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए करते हैं। वे गवाही साझा करते हैं, अभियानों का आयोजन करते हैं, सहायता जुटाते हैं और स्थानीय मुद्दों को व्यापक सार्वजनिक ध्यान में लाते हैं। इसलिए तकनीक केवल ऐसी चीज़ नहीं है जो हमारे साथ घटित होती है; यह ऐसा माध्यम भी बन सकती है जिसके द्वारा हम समाज को आकार देने में सहभागी होते हैं।

बाइबिल की परंपरा ऐसी सजगता को विश्वास से जोड़ती है। भविष्यद्वक्ताओं ने उस उपासना को चुनौती दी जो न्याय से अलग थी: "भलाई करना सीखो; न्याय की खोज करो, अत्याचारी को सुधारो।" (यशायाह 1:17)

यीशु अपने सेवकाई कार्य में इस चिंता को केंद्र में रखते हैं। लूका 4:18–19 में वे गरीबों को सुसमाचार, उत्पीड़ितों को स्वतंत्रता और बंधुओं को छुटकारे की घोषणा करते हैं। हाशिये पर रहने वाले लोगों के प्रति उनकी चिंता परमेश्वर के राज्य की अभिव्यक्ति है।

अच्छे सामरी की कहानी (लूका 10:25–37) इस आध्यात्मिकता का एक सरल चित्र प्रस्तुत करती है। सामरी घायल व्यक्ति को देखता है, करुणा से भर जाता है, उसके पास जाता है और कार्य करता है। इसलिए आज हमारे लिए प्रश्न यह है: हम अपने आपको क्या देखने देते हैं और जो देखते हैं, उसके साथ क्या करने का चुनाव करते हैं?

यहीं आध्यात्मिकता व्यवहारिक जीवन बनती है। प्रश्न केवल यह नहीं है कि हम तकनीक का उपयोग कैसे करते हैं, बल्कि यह भी है कि क्या हमारा तकनीकी उपयोग हमें अपने आसपास की वास्तविकताओं के प्रति अधिक सजग बनाता है।

न्याय की आध्यात्मिकता हमें केवल पीड़ा की तस्वीरें देखने और साझा करने से आगे बढ़कर उसके परिवर्तन में सहभागी होने

के लिए बुलाती है—जो अदृश्य बना दिया गया है उसे देखने के द्वारा, जो जीवन को नकारता है उसे पहचानने के द्वारा और अपने डिजिटल मंचों का उपयोग उन बातों को बढ़ावा देने के लिए करने के द्वारा जिनसे जीवन फल-फूल सके।

इस प्रकार हम न्याय और करुणा के बीज बोते हैं और विश्वास करते हैं कि विश्वासयोग्य कार्य परमेश्वर के समय में फल ला सकता है।

आध्यात्मिकता और संवाद

हमारा संदर्भ हमें विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, धर्मों, भाषाओं और विश्व-दृष्टिकोणों वाले लोगों के संपर्क में लाता है। भारत हमेशा से ऐसी विविधता वाला देश रहा है, लेकिन डिजिटल नेटवर्क ने इन संपर्कों को और बढ़ा दिया है। फिर भी निकटता का अर्थ आवश्यक रूप से समझ नहीं होता। हम दूसरे व्यक्ति से बार-बार मिल सकते हैं, फिर भी वास्तव में उसकी बात सुन नहीं सकते।

मसीही विश्वास में संवाद का एक धर्मशास्त्रीय आधार है। हम त्रिएक परमेश्वर—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—में विश्वास करते हैं, जिनके अस्तित्व का स्वरूप ही संबंधपरक है। हम यह भी विश्वास करते हैं कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है और एक-दूसरे के साथ संबंध में रहने के लिए बुलाया गया है। देहधारण का सिद्धांत इस समझ को और गहरा करता है। यीशु मसीह में परमेश्वर मानव इतिहास में प्रवेश करता है और मानवता का सामना भीतर से करता है।

सामरी स्त्री के साथ यीशु की भेंट (यूहन्ना 4) विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यीशु लिंग, जातीयता, धर्म और सामाजिक स्थिति की सीमाओं को पार करके उसके साथ संवाद करते हैं। यह भेंट उनके बीच के अंतर को मिटाती नहीं है, बल्कि समझ और परिवर्तन के लिए स्थान उत्पन्न करती है।

पतरस और कुरनेलियुस की कहानी (प्रेरितों के काम 10) इसे और आगे ले जाती है। पतरस इस धारणा के साथ आता है कि कौन परमेश्वर के लोगों में सम्मिलित है, लेकिन इस भेंट के माध्यम से वह समझता है कि परमेश्वर उन सीमाओं के बाहर भी कार्य कर रहा है जिनकी उसने कल्पना की थी। स्वयं पतरस भी बदल जाता है। इसलिए संवाद केवल इस बात के बारे में नहीं है कि हमें दूसरों को क्या सिखाना है; यह हमारी सुनने, सीखने और परिवर्तित होने की इच्छा के बारे में भी है।

संवाद के लिए ठोस अभ्यास आवश्यक हैं—अन्य धर्मों और संस्कृतियों के लोगों की कहानियाँ सुनना, उनके उपासना-स्थलों पर जाना, साथ भोजन करना, ईमानदार बातचीत के लिए स्थान बनाना और शांति, गरीबी तथा सृष्टि की देखभाल जैसे मुद्दों पर मिलकर काम करना। डिजिटल संसार में इसका अर्थ हो सकता है—प्रतिक्रिया देने से पहले रुकना, आगे भेजने से पहले सत्यापन करना, निर्णय करने से पहले सुनना और ऑनलाइन घृणा को अस्वीकार करना।

इसका अर्थ यह भी है कि संवाद के लिए हमें अपने विश्वासों को छोड़ना आवश्यक नहीं है। बल्कि हमें अपने विश्वासों को नम्रता के साथ थामना और दूसरे व्यक्ति का सम्मानपूर्वक सामना करना है। सुनना स्वयं एक आध्यात्मिक अभ्यास है।

ऐसी प्रत्येक भेंट शांति और समझ का एक बीज बन सकती है, जिसे हम विश्वास में धैर्यपूर्वक बोते हैं और उसके फलदायी होने के लिए परमेश्वर को सौंप देते हैं।

आध्यात्मिकता और एकजुटता

संवाद केवल बातचीत तक सीमित नहीं रह सकता। जब हम किसी दूसरे व्यक्ति की कहानी सुनते हैं, तो हम उसके संघर्षों से

भी परिचित होने लगते हैं। यही हमें एकजुटता की ओर ले जाता है—दूसरों के लिए केवल सहानुभूति महसूस करना ही नहीं, बल्कि उनके साथ खड़े होना और उनके साथ यात्रा करना।

हम डिजिटल मीडिया के माध्यम से लगातार युद्ध, विस्थापन, गरीबी, हिंसा और पर्यावरणीय विनाश जैसी पीड़ाओं से परिचित होते हैं। फिर भी स्क्रीन पर पीड़ा देखना आवश्यक रूप से हमें पीड़ित लोगों के करीब नहीं लाता। यह हमें केवल दर्शक बना सकता है।

मसीही आध्यात्मिकता इस दूरी को चुनौती देती है। यीशु की सेवकाई उन लोगों की ओर उनके बढ़ने से चिन्हित है जो समाज के हाशिये पर थे। वे कोढ़ी को छूते हैं, उन लोगों के साथ भोजन करते हैं जिन्हें पापी कहा जाता था, बहिष्कृत लोगों की गरिमा को पुनः स्थापित करते हैं और उन लोगों की पुकार का उत्तर देते हैं जिन्हें अनदेखा किया जाता था। क्रूस इस एकजुटता की सबसे गहरी अभिव्यक्ति है। मसीह में परमेश्वर मानव पीड़ा का दूर बैठा हुआ दर्शक नहीं रहता, बल्कि मानव टूटन की गहराइयों में प्रवेश करता है।

भारतीय संदर्भ में फादर स्टेन स्वामी का जीवन और साक्ष्य एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। आदिवासी समुदायों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उनकी उपस्थिति, साथ चलने और उनके पक्ष में आवाज़ उठाने के रूप में प्रकट हुई। उन्होंने उन समुदायों की बात सुनी जिनकी आवाज़ें अक्सर अनसुनी रह जाती थीं और भूमि, विस्थापन, अधिकार तथा गरिमा से जुड़े संघर्षों में उनके साथ खड़े रहे।

उनका जीवन हमें स्मरण कराता है कि एकजुटता का अर्थ दूर से लोगों की ओर से बोलना नहीं है; बल्कि उपस्थित रहना, सुनना, सीखना, साथ चलना और उनके साथ खड़े होना है। यही आध्यात्मिकता का व्यवहारिक रूप है।

जो कुछ हम देखते और अनुभव करते हैं, उसे हमें बिना प्रभावित हुए नहीं छोड़ देना चाहिए। एकजुटता हमें दर्शक बनने से साथी बनने की ओर बुलाती है। मैंने किसकी पीड़ा को अनदेखा करना सीख लिया है? मैं किसके साथ खड़े होने के लिए तैयार हूँ?

ऐसी एकजुटता में बलिदान, धैर्य और दृढ़ता की आवश्यकता हो सकती है। फिर भी भजन 126:5 की आध्यात्मिकता हमें स्मरण कराती है कि आँसुओं के साथ किया गया विश्वासयोग्य बीजारोपण व्यर्थ नहीं है। परमेश्वर उससे आनंद की फसल उत्पन्न कर सकता है।

निष्कर्ष: आज की आध्यात्मिकता की चुनौती

आज आध्यात्मिकता की चुनौती अंततः विश्वासयोग्यता की चुनौती है। तेजी से बदलते संदर्भ में मसीही विश्वास को न तो केवल परिचित परंपराओं को बनाए रखने तक सीमित किया जा सकता है और न ही हर नए सांस्कृतिक विकास का अनुसरण करने तक।

इसके लिए विवेक की आवश्यकता है—यह पहचानना कि कहाँ जीवन को प्रोत्साहित किया जा रहा है और कहाँ उसे कम किया जा रहा है; कहाँ संबंध मजबूत हो रहे हैं और कहाँ लोगों को बाहर कर दिया जा रहा है। सुसमाचार हमें ऐसे विवेक का मार्ग दिखाता है।

यीशु का जीवन दिखाता है कि परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध हमें संसार से अलग नहीं करता, बल्कि लोगों और उनके संघर्षों के प्रति हमारी सजगता को और गहरा करता है। उनकी करुणा भेंट में बदलती है, उनकी भेंट कार्य में बदलती है और उनका

कार्य परमेश्वर के राज्य की ओर संकेत करता है।

कलीसिया के लिए इसका अर्थ ऐसी आध्यात्मिकता को पुनः प्राप्त करना है जो सतह से आगे देख सके, अपनी परंपराओं और धारणाओं से आगे सुन सके और अपने आराम के क्षेत्र से बाहर निकलकर दूसरों के साथ चल सके। इसका अर्थ है कि हम प्रार्थना को अपनी करुणा की क्षमता को गहरा करने दें, पवित्रशास्त्र को हमारे विवेक को तीक्ष्ण करने दें और विश्वास को अपने समुदायों के जीवन में जिम्मेदार सहभागिता में बदलने दें।

शायद वह प्रश्न जिसे हमें आगे लेकर चलना चाहिए, केवल यह नहीं है कि "हम कितने आध्यात्मिक हैं?" बल्कि यह है कि "हमारी आध्यात्मिकता हमें किस प्रकार के मनुष्य बना रही है?"

यदि हमारी आध्यात्मिकता हमें परमेश्वर के प्रति अधिक सजग, दूसरों के प्रति अधिक खुले, पीड़ा के प्रति अधिक संवेदनशील तथा जीवन और मानवीय गरिमा के प्रति अधिक प्रतिबद्ध बनाती है, तो हमारी आध्यात्मिकता मसीह की जीवित गवाही बन रही है।

इस अर्थ में आज की आध्यात्मिकता जीवन की जटिलताओं से दूर किसी स्थान को खोजने के बारे में नहीं है। यह इन्हीं जटिलताओं के बीच मसीह का विश्वासयोग्य अनुसरण करना सीखने के बारे में है।

उस किसान के समान जो बिना तुरंत फसल देखे विश्वास से बीज बोता है, हमें न्याय, संवाद, करुणा और एकजुटता के बीज बोने के लिए बुलाया गया है। हो सकता है कि हम हमेशा अपने परिश्रम का फल न देख पाएँ, लेकिन भजन 126:5 हमें विश्वास करने के लिए स्मरण कराता है कि "जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए काटेंगे।"

इसलिए विश्वास में बोना और आनंद में काटना केवल हार्वेस्ट के लिए एक विषय नहीं है, बल्कि आज हमारी आध्यात्मिकता को जीने का एक तरीका है—संसार में विश्वासयोग्यता से मसीह के प्रेम के बीज बोना और फसल के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना।



आज का नेतृत्व

रेव. सुशील सुमित्रा

यू.बी.एम. क्रिस्ता कृपा चर्च, चेंबूर

फसल: नेतृत्व से मिलने वाली सीख

फसल के समय में कुछ ऐसा है जो हमें विनम्र बना देता है।

किसी खेत के सुनहरे रंग में बदलने से बहुत पहले ही किसी ने अपना काम शुरू कर दिया होता है। बीज बोया गया है, मिट्टी तैयार की गई है, खरपतवार निकाली गई है और पानी पहुँचाया गया है। इस काम का बहुत-सा हिस्सा चुपचाप होता है—बिना किसी प्रशंसा के और बिना इस निश्चितता के कि अन्तिम फसल कैसी होगी। शायद यही सेवक नेतृत्व की सबसे स्पष्ट तस्वीरों में से एक है।

हम अक्सर नेतृत्व की कल्पना इस रूप में करते हैं कि कोई व्यक्ति सबसे आगे खड़ा होकर निर्णय लेता है, दिशा देता है और सबकी नजरों में रहता है। लेकिन पवित्रशास्त्र हमें नेतृत्व की एक बिल्कुल अलग तस्वीर देता है। वह हमें एक खेत में ले जाता है। वह हमें उस कमरे में ले जाता है जहाँ यीशु तौलिया और पानी का पात्र लेकर घुटनों पर बैठते हैं और अपने शिष्यों के पैर धोते हैं। और फिर वे ये शब्द कहते हैं, "जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने।" (मरकुस 10:43)

इस प्रकार के नेतृत्व में कोई दिखावा नहीं है। यह केवल सेवा करने की इच्छा है।

विकास के लिए धैर्य रखना

याकूब किसान के उदाहरण के द्वारा धैर्य का वर्णन करता है: "देखो, किसान भूमि की बहुमूल्य उपज की बाट जोहता रहता है और जब तक उसे अगली और पिछली वर्षा नहीं मिल जाती, तब तक धीरज धरता है।" (याकूब 5:7)

एक किसान बीज को मिट्टी से निकालकर यह देखने के लिए नहीं खींच सकता कि वह बढ़ रहा है या नहीं। वह वर्षा को जल्दी नहीं ला सकता। वह पूरे दिन खेत के सामने खड़े होकर फसल से परिणाम की मांग नहीं कर सकता।

वह केवल उसकी देखभाल कर सकता है। वह पानी देता है। वह देखता रहता है। जो कुछ फसल के लिए खतरा बनता है, उसे हटा देता है। और वह लगातार अपना काम करता रहता है।

नेतृत्व भी अक्सर ऐसा ही होता है।

चाहे हम किसी कलीसिया, टीम, परिवार का नेतृत्व कर रहे हों या केवल किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर रहे हों, हमारे द्वारा किया गया बहुत-सा महत्वपूर्ण कार्य तुरन्त दिखाई नहीं देता। प्रोत्साहन का एक शब्द वर्षों बाद फल दे सकता है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा या युवा व्यक्ति शायद बहुत बाद में समझ पाए कि रविवार स्कूल के शिक्षक या शिक्षिका के मार्गदर्शन और प्रोत्साहन का उसके जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा।

हम अक्सर नेतृत्व को तुरन्त मिलने वाले परिणामों से मापने की कोशिश करते हैं। लेकिन हमारे द्वारा किए गए कुछ सबसे महत्वपूर्ण कार्यों का कोई तत्काल प्रमाण दिखाई नहीं देता।

इसीलिए गलातियों में पौलुस के शब्द हमारे लिए सांत्वना देने वाले भी हैं और चुनौती देने वाले भी: "हम भलाई करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।" (गलातियों 6:9)

ठीक समय पर। जरूरी नहीं कि वह समय वही हो जिसकी हमने अपेक्षा की हो। जरूरी नहीं कि हम उस समय वहाँ उपस्थित हों और उस फल को देख सकें। इसके लिए धैर्य और विश्वास की आवश्यकता होती है।

हमारे सामने का खेत

लेकिन फसल का एक दूसरा पहलू भी है।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: "अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।" (यूहन्ना 4:35)

वे पक चुके हैं। किसी दिन नहीं—अभी।

यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि नेतृत्व कभी-कभी काम को टालने का बहाना बन सकता है। हम अपने आप से कहते हैं कि जब हमारे पास अधिक अनुभव होगा, अधिक अधिकार होगा, अधिक समय होगा या कोई महत्वपूर्ण पद मिलेगा, तब हम दूसरों के जीवन में परिवर्तन लाएँगे। लेकिन नेतृत्व शायद ही कभी किसी पद या उपाधि से शुरू होता है। यह देखने और पहचानने से शुरू होता है।

कलीसिया का कोई सदस्य है जिसे प्रोत्साहन की आवश्यकता है। कोई बच्चा है जिसे किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो उस पर विश्वास करे। कोई व्यक्ति है जो चुपचाप कलीसिया से दूर हो गया है। कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे सलाह देने के बजाय केवल सुने जाने की आवश्यकता है।

हमें नेतृत्व के किसी अवसर की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। अक्सर अवसर हमारे सामने पहले से ही मौजूद होता है।

सेवक नेतृत्व एक सरल प्रश्न पूछता है: "आज परमेश्वर ने मेरे मार्ग में किस व्यक्ति को रखा है, और मैं उसके लिए क्या कर सकता हूँ?"

कभी-कभी नेतृत्व उतना साधारण होता है जितना पीछे रुककर सहायता करना, एक कठिन फोन करना, थके हुए होने पर भी किसी की बात सुनना, किसी को दूसरा अवसर देना या चुपचाप ऐसा काम कर देना जिसे शायद कोई देखे भी नहीं। हो सकता है कि ये बातें कभी किसी नेतृत्व की उपलब्धियों की सूची में दिखाई न दें। फिर भी वे महत्वपूर्ण हैं।

ऐसे बीज बोना जिनका फल हम शायद कभी न देखें

नेतृत्व की सबसे कठिन सीखों में से एक यह है कि संभव है कि हम स्वयं उस फसल को न देख पाएँ।

यीशु ने कहा: "एक बोता है और दूसरा काटता है।" (यूहन्ना 4:37)

एक शिक्षक शायद कभी यह न जान पाए कि उसके द्वारा दिया गया कोई पाठ किसी विद्यार्थी के जीवन पर कितना प्रभाव डाल गया। एक मार्गदर्शक शायद उस नेता को कभी न देख पाए जो आगे चलकर उस युवा व्यक्ति के रूप में विकसित होगा। माता-पिता वर्षों तक जीवन-मूल्यों के बीज बोते रहते हैं, बिना यह जाने कि उनके कौन-से शब्द उनके बच्चे के हृदय में सबसे गहराई से रह जाएंगे।

यह उन लोगों के लिए कठिन हो सकता है जो नेतृत्व करते हैं, क्योंकि स्वाभाविक रूप से हम परिणाम देखना चाहते हैं। हम यह जानना चाहते हैं कि हमारा काम वास्तव में महत्वपूर्ण था। लेकिन शायद यही वह स्थान है जहाँ नेतृत्व उपलब्धि से अधिक विश्वसनीयता और विश्वासयोग्यता का विषय बन जाता है।

हमें हमेशा वह फसल काटने के लिए नहीं बुलाया गया है जिसे हमने बोया है। कभी-कभी हमें केवल अच्छी तरह से बीज बोने के लिए बुलाया जाता है। हम आज जो कुछ प्राप्त कर रहे हैं, उसका कोई बीज हमसे पहले किसी और ने बोया था। और जो बीज हम आज बो रहे हैं, उसका लाभ हमारे बाद आने वाला कोई व्यक्ति उठा सकता है। यही फसल का स्वभाव है। यह शायद ही कभी केवल एक व्यक्ति का कार्य होती है।

घुटने टेकने योग्य खेत

तो फसल हमें नेतृत्व के बारे में क्या सिखाती है?

यह हमें सिखाती है कि हमें अपने सामने के खेत पर ध्यान देना चाहिए; जो कुछ हमें सौंपा गया है उसकी देखभाल करनी चाहिए; परिणाम धीमे होने पर भी कार्य करते रहना चाहिए; यह समझना चाहिए कि विकास को हमेशा जल्दी नहीं किया जा सकता; और ऐसे बीज बोने के लिए तैयार रहना चाहिए जिनकी फसल कोई और काटेगा।

सबसे बढ़कर, यह हमें मसीह की याद दिलाती है।

जिसे हम प्रभु कहते हैं, उन्होंने घुटने टेकना चुना। उन्होंने तौलिया और पानी का पात्र चुना। उन्होंने सेवा को चुना। और अन्ततः उन्होंने क्रूस को चुना। यह उस संसार के लिए नेतृत्व का एक कठिन आदर्श है जो अक्सर नेतृत्व को दिखाई देने, प्रभाव और शक्ति के साथ जोड़ता है। फिर भी पवित्रशास्त्र हमारे सामने नेतृत्व का यही आदर्श रखता है।

इसलिए शायद आज नेतृत्व करने का अर्थ यह नहीं है कि हमारे पास सभी उत्तर हों या हम परिणाम के बारे में पूरी तरह निश्चित हों। इसका अर्थ केवल इतना है कि जिस खेत को परमेश्वर ने हमें सौंपा है, उसमें हम विश्वासयोग्य बने रहें।

वहाँ काम किया जाना है।

एक बीज बोना है। किसी जीवन को प्रोत्साहित करना है। एक खरपतवार निकालना है। किसी व्यक्ति को ध्यान देकर देखना है। एक कार्य को अच्छी तरह करना है।

और हमारी आँखों से परे कहीं, एक फसल तैयार हो रही है।

“जो कुछ तुम करो, तन-मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं, परन्तु प्रभु के लिए करते हो।” (कुलुस्सियों 3:23)



माकारियोस

रेव. रॉबिन गारज़र
ई.सी.आई. चर्च, तलोजा, नवी मुंबई

माकारियोस: विश्वास में बोना, आनन्द में काटना

हम सभी एक आशीषित जीवन की इच्छा रखते हैं। बहुतों के लिए आशीषित होने का अर्थ आर्थिक सुरक्षा, भौतिक समृद्धि, अर्थपूर्ण संबंध, सामाजिक प्रभाव, सम्मानित पद या सुख-सुविधाओं से भरा जीवन है।

लेकिन क्या हो यदि "आशीषित जीवन" के बारे में हमारी समझ परमेश्वर की समझ से भिन्न हो? वास्तव में आशीषित होने का क्या अर्थ है?

इसका एक स्पष्ट उत्तर मत्ती 5:3–12 में दिए गए धन्य वचनों (Beatitudes) में मिलता है। यीशु बार-बार यूनानी शब्द माकारियोस (μακάριος) का प्रयोग करते हैं, जिसका सामान्यतः अनुवाद "धन्य" या "आशीषित" किया जाता है। यह शब्द उस व्यक्ति की स्थिति को दर्शाता है जो धन्य, परमेश्वर की कृपा से अनुगृहीत और गहरे अर्थ में सौभाग्यशाली है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि माकारियोस मुख्य रूप से क्षणिक भावनात्मक खुशी का वर्णन नहीं करता। बल्कि यह उस व्यक्ति की धन्य अवस्था को व्यक्त करता है जो परमेश्वर का है और उसके अनुग्रह तथा कृपा के अधीन जीवन जीता है।

दुनिया अक्सर आशीष को इस आधार पर मापती है कि हमारे पास क्या है, हम किस पद पर हैं, हम किन लोगों को जानते हैं और हमें कितनी सुख-सुविधाएँ प्राप्त हैं। लेकिन यीशु इसे अलग ढंग से मापते हैं। वे कहते हैं, "धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं," "धन्य हैं वे जो शोक करते हैं," "धन्य हैं वे जो नम्र हैं," और "धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं।" यहाँ तक कि वे उन लोगों को भी धन्य कहते हैं जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं।

यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि यीशु माकारियोस उन लोगों के लिए प्रयोग करते हैं जिन्हें संसार शायद दुर्भाग्यशाली माने—मन के दीन, शोक करने वाले, नम्र, धार्मिकता के भूखे-प्यासे और सताए जाने वाले लोग।

क्यों? क्योंकि यीशु यह नहीं सिखा रहे कि पीड़ादायक परिस्थितियाँ अपने आप में आशीष हैं। वे यह प्रकट कर रहे हैं कि सच्ची और अंतिम धन्यता बाहरी परिस्थितियों से निर्धारित नहीं होती। मन के दीन स्वर्ग के राज्य के अधिकारी हैं; शोक करने वाले शान्ति पाएँगे; नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे; और जो धार्मिकता के भूखे-प्यासे हैं वे तृप्त किए जाएँगे।

जो व्यक्ति परमेश्वर का है, वह वास्तव में धन्य है, भले ही उसकी परिस्थितियाँ बाहर से धन्य दिखाई न दें।

ऐसे विश्वास का एक सुंदर उदाहरण मंदिर में आई उस गरीब विधवा के जीवन में मिलता है, जिसका वर्णन मरकुस 12:41–44 और लूका 21:1–4 में किया गया है। यीशु मंदिर की भेंट-पेटी के पास बैठे हुए लोगों को अपने भेंट डालते हुए देख रहे थे। बहुत से धनी लोगों ने बड़ी-बड़ी धनराशियाँ डालीं। तब एक गरीब विधवा आई और उसने दो छोटी ताँबे की मुद्राएँ

डाल दीं।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि इस विधवा ने उन सब से अधिक डाला है, क्योंकि दूसरों ने अपनी बहुतायत में से दिया, लेकिन उसने अपनी गरीबी में से अपना सब कुछ, अर्थात् अपनी पूरी जीविका डाल दी।

उसकी भेंट मात्रा में छोटी थी, लेकिन बलिदान में बहुत बड़ी थी। यीशु ने केवल उस धनराशि को नहीं देखा; उन्होंने उसके पीछे छिपे हृदय, बलिदान और विश्वास को देखा।

वह विधवा हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर हमारी विश्वासयोग्यता को केवल इस आधार पर नहीं मापता कि हमारे पास कितना है या हम कितना देते हैं। जो बात मनुष्य की आँखों में छोटी दिखाई देती है, जब वह परमेश्वर को समर्पित की जाती है, तो परमेश्वर के हाथों में अत्यन्त महत्वपूर्ण बन सकती है।

यहीं विश्वास में बोने का अर्थ समझ में आता है।

विश्वास में बोने का अर्थ यह नहीं है कि हम परमेश्वर को कुछ इस प्रकार दें मानो हम उसके साथ कोई लेन-देन कर रहे हों—अर्थात् हम कुछ दें और उसके बदले निश्चित रूप से भौतिक समृद्धि प्राप्त करने की गारंटी चाहें। बाइबल विश्वास परमेश्वर को नियंत्रित या प्रभावित करने का प्रयास नहीं है।

इसके बजाय, विश्वास में बोना यह कहना है: "प्रभु, मेरे पास जो कुछ है वह आपका है। मैं अपने संसाधनों, अपने भविष्य, अपने परिवार, अपनी सेवकाई, अपने अवसरों और यहाँ तक कि अपनी अनिश्चितताओं को भी आपके हाथों में सौंपता हूँ। मुझे आप पर भरोसा है।"

जब हम परमेश्वर की आज्ञा का विश्वासयोग्यता से पालन करते हैं, भले ही हमें उसके परिणाम तुरन्त दिखाई न दें, तब भी हम बो रहे होते हैं।

पौलुस हमें स्मरण दिलाते हैं: "मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" (गलातियों 6:7) और वह विश्वासियों को भलाई करते हुए निराश न होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि: "हम भलाई करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।" (गलातियों 6:9)

परमेश्वर जिस फसल का वादा करता है, वह आवश्यक रूप से सांसारिक धन या भौतिक समृद्धि नहीं होती। कभी-कभी वह फसल बदले हुए जीवन, आत्मिक परिपक्वता, दृढ़ विश्वास, फलदायी सेवकाई या अनन्त प्रतिफल के रूप में आती है। परमेश्वर विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता को कभी व्यर्थ नहीं जाने देता।

इसलिए हम बोते हैं—इसलिए नहीं कि हमें एक आरामदायक जीवन की गारंटी दी गई है, बल्कि इसलिए कि परमेश्वर हमारे भरोसे के योग्य है।

हम देते हैं—परमेश्वर की कृपा को खरीदने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि हम पहले ही उसकी कृपा प्राप्त कर चुके हैं।

दुनिया बीज को माप सकती है; लेकिन परमेश्वर उस विश्वास को देखता है जिसके साथ वह बोया गया है। दुनिया एक छोटी भेंट देख सकती है; लेकिन परमेश्वर एक समर्पित हृदय देखता है।

इसलिए सच्चा माकारियोस व्यक्ति आवश्यक रूप से वह नहीं है जिसके पास सबसे अधिक है, जो सबसे अधिक संपत्ति

रखता है या जिसका जीवन सबसे आसान है।

सच्चा धन्य व्यक्ति वह है जो परमेश्वर का है, उस पर विश्वासयोग्यता से भरोसा करता है और आज्ञाकारिता में बोता रहता है—तब भी जब फसल अभी दिखाई नहीं देती।

जब परिस्थितियाँ प्रतिकूल दिखाई दें, तब हमें यह याद रखना चाहिए: आशीष केवल उस चीज़ में नहीं है जो हमें अन्ततः प्राप्त होती है। आशीष इस बात में है कि हम परमेश्वर के हैं।

क्योंकि जो व्यक्ति मसीह का है, वह विश्वास के साथ बो सकता है, आशा के साथ धीरज धर सकता है और अन्ततः आनन्द के साथ कटनी काट सकता है।



पारूसिया

रेव. गॉडफ्रे सोअन्स
यू.बी.एम. सुशांति चर्च, भायखला

पारूसिया (Παρουσία)

यूनानी शब्द Παρουσία (Parousia) का अर्थ है "आगमन" (COMING) या "उपस्थिति" (PRESENCE) तथा इसका अर्थ आगमन / पदार्पण (ADVENT/ARRIVAL) भी है।

प्रारम्भिक मसीही लेख यह प्रमाणित करते हैं कि मसीह के देहधारी पारूसिया अर्थात् उनके पुनः आगमन में विश्वास सार्वभौमिक और मसीही विश्वास की आधारभूत शिक्षा थी। अधिकांश मसीही लोग अन्तिम फसल को उस समय के रूप में देखते हैं जब प्रभु यीशु मसीह पुनः आएँगे।

बाइबल में "फसल" (HARVEST) उस अन्तिम समय की एक तस्वीर है, जब यीशु मसीह आएँगे।

मसीह का आगमन (Παρουσία) कृषि सम्बन्धी रूपकों—बीज बोने, फसल काटने और न्याय—के माध्यम से विशेष रूप से स्पष्ट होता है। ये रूपक मुख्य रूप से सुसमाचारों और प्रकाशितवाक्य में पाए जाते हैं।

गेहूँ और जंगली बीज का दृष्टान्त

यीशु ने मत्ती 13:30 में जंगली बीज के दृष्टान्त में कहा: "कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो। कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूँगा, पहले जंगली पौधों को इकट्ठा करके जलाने के लिए उनके गट्ठर बाँध लो; और गेहूँ को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।"

पद 39 में कहा गया है: "कटनी जगत का अन्त है और काटने वाले स्वर्गदूत हैं।" पद 40 में कहा गया है: "अतः जैसे जंगली पौधे इकट्ठे करके आग में जलाए जाते हैं, वैसे ही जगत के अन्त में होगा।" मसीह के आगमन के समय स्वर्गदूत धर्मियों और अधर्मियों को अलग करेंगे।

यीशु अन्तिम न्याय को फसल काटने के समय के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जब संसार पूरी तरह पक चुका होगा।

कभी-कभी यीशु ने वर्तमान फसल के बारे में भी बोने वाले के दृष्टान्त में बात की। उनका आशय था कि उस समय उनके सामने उपस्थित लोग परमेश्वर का संदेश सुनने के लिए तैयार थे।

यह हमें सिखाता है कि संसार में हमेशा एक शत्रुतापूर्ण शक्ति सक्रिय रहती है, जो अच्छे बीज को नष्ट करने के लिए अवसर खोजती रहती है। इसकी शिक्षा यह है कि हमें हमेशा:

सतर्क रहना चाहिए।

यह हमें यह भी सिखाता है कि अच्छे और बुरे लोगों के बीच अन्तर करना कितना कठिन है। कुछ लोग बाहर से अच्छे दिखाई दे सकते हैं, जबकि वास्तव में वे वैसे न हों।

यह हमें सिखाता है कि हमें दूसरों के बारे में बहुत जल्दी न्याय नहीं करना चाहिए।

यह हमें सिखाता है कि सही और अन्तिम न्याय करने का अधिकार केवल परमेश्वर को है।

अन्ततः यह दृष्टान्त दो बातें सिखाता है:

(क) यह एक चेतावनी है कि हमें लोगों का न्याय करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

(ख) यह एक चेतावनी भी है कि अन्त में परमेश्वर का न्याय अवश्य आएगा।

मसीह के आगमन के विषय में यीशु की शिक्षा

मत्ती 24:3 के अनुसार, जब यीशु जैतून के पहाड़ पर बैठे थे, तब शिष्य एकान्त में उनके पास आए और पूछा: "हमें बता, ये बातें कब होंगी और तेरे आने और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?"

यीशु ने समझाते हुए पद 27 में कहा: "क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से चमककर पश्चिम तक दिखाई देती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना होगा।"

पद 37 में कहा गया है: "जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।"

और पद 39 में: "और जब तक जल-प्रलय आकर उन सबको बहा न ले गया, तब तक उन्होंने कुछ न जाना। ऐसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।"

यहाँ यीशु सीधे अपने दूसरे आगमन के विषय में बोलते हैं। नए नियम में वास्तव में "Second Coming" अर्थात् "दूसरा आगमन" शब्द-समूह का प्रयोग नहीं किया गया है।

मसीह के महिमा में पुनः आगमन का वर्णन करने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया गया है, वह बहुत महत्वपूर्ण है—"PAROUSIA" (पारूसिया)। यह शब्द अंग्रेजी में भी दूसरे आगमन के वर्णन के रूप में प्रचलित हो गया है। नए नियम के अन्य भागों में यह शब्द काफी सामान्य है, लेकिन समानार्थी सुसमाचारों में यह केवल इसी अध्याय में मिलता है—मत्ती 24:3, 27, 37, 39। यह ऐसा आगमन है जो अधिकार और सामर्थ्य के साथ होगा।

दूसरे आगमन की शिक्षा

दूसरे आगमन की शिक्षा निश्चित रूप से दो महान सत्यों को सामने रखती है:

(i) मसीह की अन्तिम विजय का सत्य: जो व्यक्ति क्रूस पर चढ़ाया गया था, वही एक दिन सबका प्रभु होगा। अन्त निश्चित है; और वह अन्त मसीह का सार्वभौमिक राज्य है।

(ii) इतिहास किसी निश्चित दिशा की ओर बढ़ रहा है: दूसरे आगमन में यह महत्वपूर्ण सत्य निहित है कि सम्पूर्ण सृष्टि एक दिव्य उद्देश्य की ओर बढ़ रही है। इतिहास समाप्त होकर नष्ट नहीं हो रहा है, बल्कि वह परमेश्वर के सार्वभौमिक और अनन्त राज्य की ओर बढ़ रहा है।

मसीह के आगमन का समय परमेश्वर को और केवल परमेश्वर को ही ज्ञात है। इसलिए दूसरे आगमन के समय के विषय में अटकलें लगाना उचित नहीं है। हमारा कर्तव्य समय की भविष्यवाणी करना नहीं, बल्कि अपने आप को तैयार करना और जागते रहना है। जिस प्रकार नूह के दिनों में लोग भौतिक जीवन में इतने डूबे हुए थे कि उन्हें आने वाले जल-प्रलय का कोई अनुमान नहीं था, उसी प्रकार मसीह का आगमन उन लोगों के लिए अचानक आएगा जो संसार की भौतिक वस्तुओं में पूरी तरह डूबे हुए हैं।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और फसल का चित्र

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी आने वाले न्याय को फसल के रूपक के द्वारा प्रस्तुत करता है: "उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान भली-भाँति साफ करेगा और गेहूँ को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।" (मत्ती 3:12)

मसीह का आगमन अलगाव और न्याय का समय होगा, जब वह अपने लोगों को अपने पास इकट्ठा करेगा।

इन बातों से आगे हम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते, क्योंकि परमेश्वर ने अन्तिम ज्ञान अपने पास रखा है और यह उसकी बुद्धि में है।

मसीह का पुनरुत्थान और पारूसिया

पौलुस मसीह के पुनरुत्थान को पहला फल (First Fruit) बताते हुए सीधे उनके पारूसिया के क्रम से जोड़ता है। 1 कुरिन्थियों 15:23 में हम पढ़ते हैं कि मसीह पहला फल हैं और उनके आने पर वे जो मसीह के हैं, जिलाए जाएँगे।

पारूसिया और किसान का धैर्य

याकूब पारूसिया अर्थात् प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा में विश्वासियों को धैर्य रखने के लिए किसान का उदाहरण देता है: "इसलिए हे भाइयो और बहनो, प्रभु के आने तक धीरज धरो। देखो, किसान भूमि की बहुमूल्य उपज की बाट जोहता रहता है और जब तक उसे अगली और पिछली वर्षा नहीं मिल जाती, तब तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो और अपने हृदय को स्थिर रखो, क्योंकि प्रभु का आना निकट है।" (याकूब 5:7–8)

मसीह के आगमन के लिए तैयार रहना

1 यूहन्ना 2:28 में यूहन्ना कहता है: "और अब हे मेरे बालको, उसमें बने रहो, कि जब वह प्रकट हो, तो हमें उसके आने पर साहस हो और हम उसके सामने लज्जित न हों।"

पौलुस कहता है: "हमारे प्रभु यीशु के आने पर उसके सामने हमारी आशा, आनन्द और घमण्ड का मुकुट क्या है? क्या तुम ही नहीं हो? निश्चय ही तुम हमारी महिमा और आनन्द हो।" (1 थिस्सलुनीकियों 2:19)

और आगे वह प्रार्थना करता है: "वह तुम्हारे हृदयों को दृढ़ करे, ताकि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तब तुम हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्र और निर्दोष ठहरो।" (1 थिस्सलुनीकियों 3:13)

1 थिस्सलुनीकियों 4:16 में लिखा है: "क्योंकि प्रभु आप स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, प्रधान दूत का शब्द और परमेश्वर की तुरही सुनाई देगी..."

1 थिस्सलुनीकियों 5:23 कहता है: “शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे और तुम्हारी आत्मा, प्राण और शरीर हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक निर्दोष और सुरक्षित रहें।”

प्रकाशितवाक्य और अन्तिम फसल

प्रकाशितवाक्य 14:14–16 में यूहन्ना एक दर्शन देखता है। वह मनुष्य के पुत्र के समान किसी को श्वेत बादल पर बैठे हुए देखता है, जिसके हाथ में तेज हँसिया है। एक स्वर्गदूत उसे आदेश देता है, क्योंकि पृथ्वी की फसल पक चुकी है। यह पृथ्वी की उस अन्तिम फसल को दर्शाता है जो अन्तिम समय के न्याय से सम्बन्धित है। इसे न्याय की फसल कहा जाता है।

अपने समय के भयंकर सताव के बीच यूहन्ना जिस एक बात की लालसा रखता था, वह थी मसीह का शीघ्र पुनः आगमन।

प्रकाशितवाक्य 22:20–21 में लिखा है: “जो इन बातों की गवाही देता है, वह कहता है, ‘हाँ, मैं शीघ्र आने वाला हूँ।’ आमीन। हे प्रभु यीशु, आओ! प्रभु यीशु का अनुग्रह परमेश्वर के लोगों के साथ हो। आमीन।”

समापन

पारुसिया हमें केवल मसीह के भविष्य के आगमन की ओर देखने के लिए नहीं बुलाता, बल्कि आज विश्वासयोग्य जीवन जीने के लिए भी बुलाता है।

हमें नहीं पता कि प्रभु कब आएँगे। लेकिन हमें यह विश्वास है कि वह आएँगे। इसलिए हमारा कार्य समय की गणना करना नहीं, बल्कि अपने जीवन को तैयार रखना है।

हमें विश्वास में बोना है। हमें धैर्य रखना है। हमें जागते रहना है। हमें परमेश्वर के वचन में स्थिर रहना है। हमें पवित्र और विश्वासयोग्य जीवन जीना है।

क्योंकि बीज बोने का समय भी परमेश्वर के हाथ में है और अन्तिम फसल का समय भी।

और जब वह दिन आएगा, तब मसीह अपने लोगों को अपने पास इकट्ठा करेंगे। “आमीन। हे प्रभु यीशु, आओ!”



मिशनरी की कहानी

रेव. जॉन एलाइज़र

यू.बी.एम. क्रिस्ता कांति चर्च, कुर्ला

क्रिश्चियन लेनहार्ड ग्राइनर – भारत में बेसल मिशन के अग्रणी मिशनरी

क्रिश्चियन लेनहार्ड ग्राइनर उन अग्रणी मिशनरियों में से एक थे, जो बेसल इवेंजेलिकल मिशन की ओर से वर्ष 1834 में भारत आए थे। योहान क्रिस्टोफ लेहनर और सैमुअल हेबिच के साथ, वे भारत में मिशन कार्य स्थापित करने के लिए बेसल मिशन द्वारा भेजे गए पहले तीन मिशनरियों में से एक थे। उनका आगमन दक्षिण भारत के पश्चिमी क्षेत्रों में प्रोटेस्टेंट मिशन कार्य के इतिहास की एक महत्वपूर्ण शुरुआत थी। इन तीनों मिशनरियों ने 31 मार्च 1834 को बेसल से प्रस्थान किया और अंततः 30 अक्टूबर 1834 को मंगलुरु पहुँचे, जहाँ भारत में बेसल मिशन का पहला मिशन केंद्र स्थापित किया गया।

ग्राइनर और उनके साथी एक ऐसे क्षेत्र में पहुँचे, जिसकी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत समृद्ध थी। उन्होंने तुरंत ही वहाँ के लोगों की भाषाएँ सीखने के महत्व को समझ लिया। प्रारम्भिक बेसल मिशनरियों का मानना था कि लोगों, उनकी भाषा और उनकी सामाजिक परिस्थितियों को समझे बिना सुसमाचार का प्रभावी ढंग से प्रचार नहीं किया जा सकता। इसलिए ग्राइनर ने विशेष रूप से तुलु भाषा सीखने पर ध्यान दिया, जो दक्षिण कन्नड़ के तटीय क्षेत्र में व्यापक रूप से बोली जाती थी। तुलु भाषा में उनका कार्य स्थानीय लोगों की भाषा में मसीही शिक्षाओं को पहुँचाने के लिए बेसल मिशन के प्रारम्भिक प्रयासों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। ऐतिहासिक विवरणों में ग्राइनर का विशेष संबंध तुलु भाषा के कार्य से जोड़ा जाता है, जबकि हेबिच ने कन्नड़ और लेहनर ने कोंकणी भाषा पर ध्यान केंद्रित किया।

ग्राइनर की मिशनरी सेवाएँ सुसमाचार प्रचार तक सीमित नहीं थीं। बेसल मिशन के मूल कार्यादेश में विद्यालयों की स्थापना और धर्मशिक्षकों (कैटेकिस्टों) को प्रशिक्षित करने वाली संस्थाओं की स्थापना भी शामिल थी। इसलिए शिक्षा का सुसमाचार प्रचार के कार्य से घनिष्ठ संबंध था। मिशनरियों का मानना था कि मंडलियों को ऐसे प्रशिक्षित स्थानीय शिक्षकों और धर्मशिक्षकों की आवश्यकता है, जो अपने ही लोगों के बीच मसीही विश्वास को पहुँचा सकें। इसी दृष्टिकोण ने आगे चलकर इस क्षेत्र में विद्यालयों, प्रशिक्षण संस्थाओं और स्थानीय मसीही नेतृत्व के विकास में योगदान दिया।

ग्राइनर के मिशनरी कार्य की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता मिशन से जुड़े लोगों के आर्थिक कल्याण के प्रति उनकी चिंता थी। बेसल मिशन धीरे-धीरे कृषि तथा व्यावसायिक एवं कौशल-आधारित गतिविधियों में शामिल होने लगा, क्योंकि अनेक धर्मान्तरित लोगों को ईसाई बनने के बाद आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ऐतिहासिक विवरणों से पता चलता है कि ग्राइनर ने दक्षिण कन्नड़ में कृषि के विकास के लिए मिशन के प्रयासों का समर्थन किया और इस कार्य में सहायता के लिए बेसल मिशन के अधिकारियों से अनुरोध किया। ये प्रयास बेसल मिशन के उस व्यापक सिद्धांत को दर्शाते हैं, जिसमें ईसाई सेवकाई को शिक्षा, रोजगार और व्यावहारिक सेवा के साथ जोड़ा गया था।

ईसाई साहित्य के क्षेत्र में भी ग्राइनर का योगदान महत्वपूर्ण रहा। बेसल मिशन ने मंगलुरु में एक मुद्रणालय स्थापित किया

और स्थानीय भाषाओं में प्रारम्भिक प्रकाशन किए जाने लगे। ऐतिहासिक विवरणों में विशेष रूप से क्रिश्चियन ग्राइनर का सम्बन्ध संत मत्ती के सुसमाचार के तुलु भाषा में अनुवाद से जोड़ा जाता है। यह तुलु भाषी लोगों तक मसीही संदेश को उनकी अपनी भाषा में पहुँचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

इसलिए क्रिश्चियन लेनहार्ड ग्राइनर का महत्व केवल इस बात में नहीं है कि वे भारत आने वाले प्रारम्भिक बेसल मिशनरियों में से एक थे। उनकी सेवकाई प्रारम्भिक बेसल मिशन के उस विशिष्ट दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें लोगों की भाषा सीखना, सुसमाचार का संदेश पहुँचाना, शिक्षा की स्थापना करना, स्थानीय कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना तथा लोगों की व्यावहारिक सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं का उत्तर देना शामिल था। उनके कार्य ने उस आधार को मजबूत करने में योगदान दिया, जिस पर उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान दक्षिण भारत में बेसल मिशन का विकास हुआ।

आज ग्राइनर और उनके साथी मिशनरियों का इतिहास भारत में बेसल मिशन की परम्परा की जड़ों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस मिशनरी आन्दोलन से विकसित हुए चर्च, शैक्षणिक संस्थाएँ और मसीही समुदाय आज भी उन अग्रणी मिशनरियों को स्मरण करते हैं, जिन्होंने 1834 में मंगलुरु में अपना कार्य आरम्भ किया था। ग्राइनर का जीवन और सेवकाई आज भी कलीसिया को यह स्मरण कराते हैं कि मिशन केवल किसी संदेश की घोषणा करना मात्र नहीं है, बल्कि उन लोगों के जीवन, भाषा और आवश्यकताओं को समझते हुए उनके बीच प्रवेश करना भी है, जिनकी सेवा करने के लिए कलीसिया को बुलाया गया है।



कलीसियाओं का पृष्ठ

श्रीमती यूनिस सोअन्स

यू.बी.एम. क्राइस्ट ज्योति चर्च, ठाणे

"विश्वास में बोना, आनन्द में काटना"

जब हम बोने और काटने की बात करते हैं, तो हमारे मन में खेती का विचार आता है। यह स्वाभाविक रूप से बीज और फसल से संबंधित है। बोने और काटने में बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ता है। भजन 126:5 हमें बताता है कि विश्वास में बोना भी पीड़ा से जुड़ा हुआ है।

विश्वास किस बात में? यह बात बिना किसी संदेह के स्वीकार की जानी चाहिए कि यहाँ विश्वास मनुष्य की बुद्धि पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की सामर्थ्य पर होना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 2:5 कहता है— "तुम्हारा विश्वास मनुष्यों की बुद्धि पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।"

विश्वास के साथ बोना क्यों आवश्यक है? 1 कुरिन्थियों 2:9 में यशायाह के वचन उद्धृत किए गए हैं: "जो आँख ने नहीं देखा, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के हृदय में नहीं आईं, वे हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की हैं।" हम जिस फसल की आशा कर रहे हैं, वह इस संसार की नहीं, बल्कि स्वर्गीय और अलौकिक है। इसलिए यह अनिवार्य है कि हम "विश्वास से चलें, न कि दृष्टि से।" — 2 कुरिन्थियों 5:7

हमें यह समझना चाहिए कि बीज केवल अनाज ही नहीं होता। हमारे विचार, हमारे कार्य, हमारा समय, हमारे शब्द और निश्चित रूप से परमेश्वर का वचन भी बीज का रूप ले सकते हैं, जैसा कि यीशु ने मत्ती 13 में दृष्टांत के द्वारा समझाया। पवित्रशास्त्र और प्रकृति दोनों हमें यह सिखाते हैं कि हम जो बोते हैं, वही काटते हैं।

हम कैसे बोते हैं और कैसे काटते हैं?

हमारा विषय केवल यह नहीं है कि हम क्या बोते हैं, बल्कि यह भी है कि हम कैसे बोते हैं और कैसे काटते हैं। आइए इसे अपने दैनिक मसीही जीवन के संदर्भ में समझें।

मुझे यीशु द्वारा अपने शिष्यों को दी गई बुलाहट याद आती है। शिष्यत्व का अर्थ केवल यीशु के साथ चलना या उसका अनुसरण करना नहीं है। क्रूस उठाना—यीशु का क्रूस नहीं, बल्कि अपना क्रूस—शिष्यत्व की शर्त है। तो क्या वह "क्रूस" लकड़ी का होना आवश्यक है? नहीं! महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या मैं लूका 9:23 में दिए यीशु के वचन पर विश्वास करके अपना क्रूस उठा रहा हूँ?

यदि यीशु ने अपने शरीर अर्थात् अपने मांस को क्रूस पर मृत्यु के लिए अर्पित करके स्वयं को बोया, तो हमें भी अपने शरीर को परमेश्वर की इच्छा के लिए समर्पित करना होगा। यीशु ने गतसमनी में अपने दुःख और पीड़ा के बीच स्वयं को बोया। और हम,

जिन्हें परमेश्वर को "पिता" कहने का अधिकार दिया गया है, इब्रानियों 2:10 के अनुसार, उस बोए गए बीज की आनंद की फसल हैं। जिस प्रकार यीशु ने अपने पिता पर विश्वास किया, उसी प्रकार हमें भी अपने शरीर में दुःख सहने की इच्छा के द्वारा अपने विश्वास को प्रदर्शित करना चाहिए।

दर्द या सुख—हमारी प्रतिदिन की पसंद

इस संसार में परमेश्वर की संतान होने के कारण हमें लगभग हर दिन दर्द और सुख के बीच चुनाव करना पड़ता है। लेकिन परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास हमें पीड़ा सहने की सामर्थ्य देता है।

इसे एक उदाहरण से समझें। यदि हम अपने सुबह के समय को शारीरिक सज्जा, भोजन, जिम, काम आदि में लगाने का निर्णय लेते हैं, तो हमें अच्छा स्वास्थ्य और धन प्राप्त हो सकता है। लेकिन यदि हम अपनी शारीरिक प्राथमिकताओं का त्याग करके परमेश्वर के राज्य को पहले स्थान पर रखते हैं (मत्ती 6:33), तो यीशु ने यूहन्ना 6:63 में कहा: "आत्मा जीवन देती है; शरीर से कुछ लाभ नहीं..." इस प्रकार हम अनन्त आनंद की फसल काटते हैं।

सरल शब्दों में, "शरीर के लिए बोना" विश्वास में चलने के विपरीत है। इसका अर्थ है स्वयं-केंद्रित जीवन, न कि मसीह-केंद्रित जीवन। गलातियों 6:8 कहता है: "जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर से विनाश की फसल काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा से अनन्त जीवन की फसल काटेगा।" विश्वास में किया गया प्रत्येक बोना आत्मा में बोना है। — गलातियों 5:16

बीज हमारे हाथ में है

फसल प्राकृतिक नियम और परमेश्वर की प्रतिज्ञा का परिणाम है—और परमेश्वर की प्रतिज्ञा आनंद है। लेकिन बीज हमारे हाथ में है और बोने का निर्णय मेरा है। क्या मैं दिखाई देने वाले सुख में बोऊँगा, या परमेश्वर के अदृश्य कार्य पर विश्वास करके बोऊँगा, जो हमारे भले के लिए कार्य कर रहा है?

रोमियों 8:13 कहता है: "यदि तुम शरीर के अनुसार जीवन बिताओगे तो मरोगे; लेकिन यदि आत्मा के द्वारा शरीर के कामों को मार डालोगे, तो जीवित रहोगे।" यह मुझे बताता है कि मैं अपनी शक्ति या बुद्धि से शरीर के कामों को मृत्यु के अधीन नहीं कर सकता। — रोमियों 8:7

जब मैं विश्वास के द्वारा प्रतिदिन परमेश्वर के वचन को बोता हूँ और अपनी आत्मा को पोषित करता हूँ, तब आत्मा मुझे वह करने की सामर्थ्य देती है जो यीशु मुझसे करवाना चाहता है। रोमियों की पत्री कलीसिया को संबोधित की गई है।

पौलुस 1 कुरिन्थियों 9:27 में बोने की स्वैच्छिक प्रकृति को दर्शाता है: "मैं अपनी देह को अनुशासन में रखता और वश में लाता हूँ..." उसने स्वयं इसका अभ्यास किया और दूसरों को भी इसका प्रचार किया। यही विश्वास का वह भरोसा है जिसने याकूब को यह कहने के लिए प्रेरित किया: "जब तुम्हारे ऊपर नाना प्रकार के कष्ट आएँ, तो इसे बड़े आनंद की बात समझो।"

सारपत की विधवा—विश्वास में बोने का उदाहरण

1 राजा 17:13 में सारपत की विधवा आत्मा में बोने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। पद 14 में परमेश्वर के वचन पर विश्वास करके उस विधवा ने अपना अन्तिम मुट्ठी भर आटा बो दिया। पद 16 में जाकर उसकी आनंद की फसल देखिए!

इसलिए, प्रभु यीशु मसीह के प्रिय और बनने की इच्छा रखने वाले शिष्य, आइए हम पीड़ा से बचने या जीवन को अधिक

आरामदायक बनाने के लिए हर संभव प्रयास न करें।

आँसू भी बीज हैं

“जो कुछ विश्वास से नहीं है, वह पाप है।” — रोमियों 14:23

क्रूस मसीह के कारण सहने वाले दुःख और पीड़ा का प्रतीक है। दर्द परमेश्वर द्वारा दिया गया एक स्वाभाविक एहसास है। विश्वास भी परमेश्वर की ओर से दिया गया है। — रोमियों 12:3; इब्रानियों 12:2

लेकिन विश्वास को बढ़ने के लिए उसके साथ काम भी होना चाहिए—ऐसे कार्य जो परमेश्वर की आज्ञाओं और उसकी प्रतिज्ञाओं में विश्वास से प्रेरित हों।

जब आँसू बहते हैं, तो शरीर उस बोझ को बाहर निकाल रहा होता है जिसे वह सहन नहीं कर सकता। पुरुष, महिलाएँ, लड़के और लड़कियाँ—आँसू बहने दें! हमारे आँसू प्रभु के आनंद की फसल के लिए बीज हैं, जब हम यीशु का अनुसरण करते हुए अपना क्रूस उठाते हैं।

आइए हम यह सुनिश्चित करें कि हमारे आँसू इसलिए बहें क्योंकि हम हर कीमत पर अपनी इच्छा नहीं, बल्कि केवल परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहते हैं। — 1 पतरस 2:20

विश्वास से चलना

जब हम अपनी पाँचों इन्द्रियों से मिलने वाले प्रभावों के आगे झुकने से इनकार करते हैं और इब्रानियों 11:6 के विश्वास के द्वारा चलना चुनते हैं, तब हम आत्मा में बोते हैं। हमारे निर्णय लेने में गलातियों 5:17 एक अच्छा मापदंड है।

आइए विश्वास के द्वारा परमेश्वर के वचन के अविनाशी बीज को बोएँ (1 पतरस 1:23)—वह वचन जो तब भी स्थिर रहेगा जब आकाश और पृथ्वी मिट जाएँगे। आइए हम अपने शरीर के लिए नहीं, बल्कि मसीह की देह के लिए कार्य करने को तैयार रहें।

ऐसा जीवन केवल 1 कुरिन्थियों 13 के निःस्वार्थ प्रेम से प्रेरित हो सकता है—अपने आप को पाप के लिए मरा हुआ और मसीह के लिए जीवित समझते हुए। — रोमियों 6:11

तब यशायाह की भविष्यवाणी के अनुसार: “वह अपने प्राणों के दुःख का फल देखकर तृप्त होगा।” — यशायाह 53:11। और हम भी!

रिपोर्ट एवं तस्वीरें

यू.बी.एम. आउटरीच विभाग का ग्रीष्मकालीन शिविर

अप्पापाड़ा, मालाड · 19 – 20 अप्रैल

यू.बी.एम. आउटरीच विभाग द्वारा 19 और 20 अप्रैल को मालाड के अप्पापाड़ा क्षेत्र के बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के माध्यम से बच्चों को आनंदमय और उत्साहवर्धक वातावरण में सीखने, खेलने तथा विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए गए।

19 अप्रैल को बच्चों ने ग्रीष्मकालीन शिविर में भाग लिया। इस दौरान उनके हुनर को निखारने, आत्मविश्वास बढ़ाने तथा रचनात्मकता और आपसी सहभागिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

20 अप्रैल को बच्चों के लिए एक शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। इस भ्रमण के माध्यम से बच्चों को कक्षा के बाहर आनंददायक एवं ज्ञानवर्धक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य केवल बच्चों के समग्र विकास में सहयोग करना ही नहीं था, बल्कि सार्थक गतिविधियों और संगति के माध्यम से उनके साथ परमेश्वर के प्रेम, देखभाल और आशा को साझा करना भी था।

















यू.बी.एम. आउटरीच विभाग का ग्रीष्मकालीन शिविर – तस्वीरें

























रिपोर्ट एवं तस्वीरें

संयुक्त प्रार्थना दिवस

यू.बी.एम. क्रिस्ता कांति चर्च, कुर्ला · 1 मई 2026

यू.बी.एम. प्रार्थना विभाग द्वारा 1 मई 2026 को यू.बी.एम. क्रिस्ता कांति चर्च, कुर्ला में “प्रार्थना में बढ़ने के लिए प्रेरित” विषय के अंतर्गत संयुक्त प्रार्थना दिवस का आयोजन किया गया।

इस प्रार्थना सभा में विश्वासियों ने एकता और समर्पण की भावना के साथ एकत्र होकर परमेश्वर की उपस्थिति की खोज करने तथा विभिन्न आवश्यकताओं के लिए मध्यस्थता प्रार्थना करने का सार्थक अवसर प्राप्त किया। प्रार्थना सभा ने हमें यह स्मरण कराया कि हमारे विश्वास को मजबूत करने, परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को गहरा करने और कलीसिया में एकता को बढ़ाने में प्रार्थना का कितना महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रार्थना सभा के दौरान हमारे चर्च परिवार के लिए प्रार्थना की गई तथा परमेश्वर से मार्गदर्शन, सुरक्षा और आत्मिक उन्नति की याचना की गई। मंडली ने हमारे राष्ट्र और उसके नेताओं के लिए भी मध्यस्थता की और शांति, बुद्धि, न्याय तथा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की। इसके पश्चात प्रार्थना का दायरा पूरे विश्व तक विस्तृत किया गया, जिसमें विभिन्न समुदायों और संसार भर के उन लोगों को स्मरण किया गया जिन्हें परमेश्वर के अनुग्रह, शांति और आशा की आवश्यकता है।

संयुक्त प्रार्थना दिवस संगति और मध्यस्थता का एक आशीषित एवं आत्मिक रूप से समृद्ध समय रहा। इसने सभी को प्रार्थना के प्रति समर्पित बने रहने, एक प्रार्थनाशील समुदाय के रूप में निरंतर आत्मिक उन्नति करते रहने तथा परमेश्वर की सामर्थ्य एवं विश्वासयोग्यता पर भरोसा रखने के लिए प्रेरित किया।








रिपोर्ट एवं तस्वीरें

मेन्स फेस्ट 2026

यू.बी.एम. क्रिस्ता कांति चर्च, कुर्ला · 5 जुलाई 2026

मसीह में एक होकर, साथ-साथ बढ़ते हुए

“देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!” — भजन संहिता 133:1

रविवार, 5 जुलाई 2026 को यू.बी.एम. क्रिस्ता कांति चर्च, कुर्ला में 50 से अधिक सदस्य एक आनंदमय मेन्स डे उत्सव के लिए एकत्रित हुए। यह दिन केवल मनोरंजन का अवसर ही नहीं था, बल्कि आपसी संबंधों को मजबूत करने और मसीह में भाइयों के रूप में एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने का भी अवसर था।

कार्यक्रम का आरम्भ प्रातः 11:00 बजे आर्म रेसलिंग, पुश-अप्स, डार्ट गेम्स, पुरुषों के एकल गायन तथा वाद्य-संगीत प्रस्तुतियों के साथ हुआ। उत्साह और मैत्रीपूर्ण प्रतिस्पर्धा से भरपूर ये गतिविधियाँ लगभग शाम 5:00 बजे तक चलती रहीं।

युवा टीम ने विभिन्न खेलों के संचालन और समन्वय में सहयोग किया, जबकि महिला सदस्यों ने स्वादिष्ट भोजन तैयार करने और परोसने की जिम्मेदारी निभाई। मेन्स फेस्ट समिति के नेतृत्व तथा चर्च के सदस्यों द्वारा कार्यक्रम की योजना बनाने, निर्णायक की भूमिका निभाने और विभिन्न गतिविधियों के समन्वय में किए गए सामूहिक प्रयासों ने इस दिन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह रही कि इस समारोह ने हमें याद दिलाया कि मसीही संगति प्रेम, प्रोत्साहन, सम्मान और एक-दूसरे के सहयोग पर आधारित होती है। पुरुषों के रूप में हमें केवल एक साथ भाग लेने और उत्सव मनाने के लिए ही नहीं, बल्कि विश्वास में एक-दूसरे को मजबूत करने तथा परमेश्वर और उसके लोगों की विश्वासयोग्यता से सेवा करने के लिए भी बुलाया गया है।

यह दिन आनंदमय स्मृतियों, नवीनीकृत मित्रताओं और एकता की गहरी भावना के साथ सम्पन्न हुआ।

मेन्स डे 2026 मसीह में एकता, विश्वास, संगति और साथ मिलकर आनंद मनाने का एक सुंदर उत्सव रहा।















रिपोर्ट एवं तस्वीरें

हमारे राष्ट्र के लिए उपवास प्रार्थना

यू.बी.एम. क्रिस्ता प्रीति चर्च · 25 जुलाई

समय: प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक | आयोजक: यू.बी.एम. क्रिस्ता प्रीति चर्च युवा समूह | नेतृत्व: रेव. डेविड कांबले
विषय: “विश्वास में एक साथ, आशा में अडिग” | पवित्र शास्त्र: 2 इतिहास 7:14

परिचय

25 जुलाई को यू.बी.एम. क्रिस्ता प्रीति चर्च के युवा समूह द्वारा हमारे राष्ट्र के लिए एक विशेष उपवास प्रार्थना सभा का आयोजन प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक यू.बी.एम. क्रिस्ता प्रीति चर्च में किया गया। यह कार्यक्रम हमारे राष्ट्र के सामने उपस्थित विभिन्न चिंताओं और चुनौतियों, विशेष रूप से चल रहे छात्र आंदोलनों तथा न्याय, शांति, सुधार और सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आयोजित किया गया।

“विश्वास में एक साथ, आशा में अडिग” विषय ने अनिश्चितता और सामाजिक चिंताओं के समय एकजुट होकर प्रार्थना करने के लिए कलीसिया के आह्वान को प्रतिबिंबित किया। यह सभा 2 इतिहास 7:14 पर आधारित थी, जिसमें परमेश्वर के लोगों को दीन होने, प्रार्थना करने, उसके दर्शन की खोज करने और अपने बुरे मार्गों से फिरने के लिए बुलाया गया है।

प्रार्थना का उद्देश्य एवं प्रमुख विषय

उपवास प्रार्थना का मुख्य उद्देश्य हमारे राष्ट्र के लिए परमेश्वर के मार्गदर्शन, दया और हस्तक्षेप की खोज करना था। प्रतिभागियों को स्मरण कराया गया कि मसीही प्रार्थना समाज की वास्तविक परिस्थितियों और उसके संघर्षों से जुड़ी होनी चाहिए।

विद्यार्थियों और छात्र आंदोलनों के लिए प्रार्थना

विद्यार्थियों और चल रहे छात्र आंदोलनों के लिए विशेष प्रार्थना की गई। प्रार्थना की गई कि परमेश्वर विद्यार्थियों को बुद्धि, साहस और सुरक्षा प्रदान करे तथा नेताओं को शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण समाधान खोजने के लिए मार्गदर्शन दे। सभा में युवाओं को राष्ट्र के भविष्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हुए उनके लिए विशेष रूप से प्रार्थना की गई।

शिक्षा में सुधार के लिए प्रार्थना

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए भी प्रार्थना की गई। एक ऐसी न्यायपूर्ण, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रार्थना की गई, जो सामाजिक अथवा आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना प्रत्येक बच्चे को आगे बढ़ने के समान अवसर प्रदान करे। विद्यार्थियों, शिक्षकों, शैक्षणिक संस्थानों, परिवारों और नीति-निर्माताओं को भी प्रार्थना में स्मरण किया गया।

अपराध, हिंसा और अन्याय से सुरक्षा के लिए प्रार्थना

अपराध, हिंसा, दुर्व्यवहार और अन्याय से सुरक्षा के लिए प्रार्थना की गई, विशेष रूप से कमजोर और असहाय लोगों के लिए। कलीसिया को शांति, गरिमा और धार्मिकता के लिए आवाज़ उठाने की अपनी जिम्मेदारी का स्मरण कराया गया।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रार्थना

भ्रष्टाचार के विरुद्ध भी विशेष प्रार्थना की गई। नेतृत्व और जिम्मेदारी के पदों पर कार्यरत लोगों के लिए प्रार्थना करते हुए परमेश्वर से उन्हें बुद्धि, ईमानदारी, जवाबदेही और जनता की सच्ची सेवा करने की भावना प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

सताए जा रहे विश्वासियों के लिए प्रार्थना

सताए जा रहे विश्वासियों को भी प्रार्थना में स्मरण किया गया। उनके लिए सामर्थ्य, सुरक्षा, साहस और धीरज की प्रार्थना की गई। उपासना की स्वतंत्रता के लिए भी प्रार्थना की गई तथा यह भी प्रार्थना की गई कि विरोध और कठिनाइयों का सामना करते समय मसीही विश्वास, बुद्धि और प्रेम के साथ प्रतिक्रिया दें।

सभी के लिए स्वास्थ्य सेवा के लिए प्रार्थना

सभी लोगों, विशेषकर गरीब और जरूरतमंद लोगों के लिए सुलभ एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं हेतु प्रार्थना की गई। रोगियों, डॉक्टरों, नर्सों, स्वास्थ्यकर्मियों, अस्पतालों और नीति-निर्माताओं को प्रार्थना में याद किया गया। सभी के लिए सस्ती, सुलभ और करुणापूर्ण स्वास्थ्य सेवा की व्यवस्था के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की गई।

आध्यात्मिक महत्व

यह उपवास प्रार्थना केवल एक कलीसियाई कार्यक्रम नहीं था, बल्कि समाज की चिंताओं के प्रति एक आध्यात्मिक प्रतिक्रिया थी। उपवास और प्रार्थना के द्वारा प्रतिभागियों को परमेश्वर पर अपनी निर्भरता और मसीही नागरिकों के रूप में अपनी जिम्मेदारी का स्मरण कराया गया। सभा में इस बात पर बल दिया गया कि विश्वास विश्वासियों को करुणा, न्याय, सेवा और जिम्मेदार नागरिकता की ओर ले जाना चाहिए। "प्रार्थना का एक दिन। विश्वास। परिवर्तन।" ये शब्द कार्यक्रम की मूल भावना को व्यक्त करते हैं और प्रतिभागियों को यह विश्वास रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि प्रार्थना हृदयों को बदल सकती है, समुदायों को मजबूत कर सकती है और सकारात्मक कार्य के लिए प्रेरित कर सकती है।

निष्कर्ष

हमारे राष्ट्र के लिए आयोजित यह उपवास प्रार्थना यू.बी.एम. क्रिस्ता प्रीति चर्च के युवा समूह की एक सार्थक पहल थी। "विश्वास में एक साथ, आशा में अडिग" विषय के अंतर्गत कलीसिया ने विद्यार्थियों, शिक्षा, सुरक्षा, सुशासन, सताए जा रहे विश्वासियों और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एकजुट होकर प्रार्थना की।

कार्यक्रम का समापन इस सशक्त संदेश के साथ हुआ कि कलीसिया केवल आशा की बात करने के लिए नहीं, बल्कि आशा के साथ प्रार्थना करने और परमेश्वर की शांति, न्याय एवं परिवर्तन के साधन के रूप में जीवन जीने के लिए बुलायी गई है। जैसा कि 2 इतिहास 7:14 हमें स्मरण कराता है, सच्चा परिवर्तन तब आरंभ होता है जब परमेश्वर के लोग दीन होकर उसे खोजते हैं और अपने मार्गों से फिरकर धार्मिकता की ओर लौटते हैं।

25 जुलाई को आयोजित यह सभा इस बात की गवाही बनी कि जब परमेश्वर के लोग विश्वास में एक साथ आते हैं, आशा में अडिग खड़े रहते हैं और सच्चे मन से प्रार्थना करते हैं, तब कलीसिया राष्ट्र के प्रति परमेश्वर के प्रेम और उसकी चिंता की एक प्रभावशाली साक्षी बन सकती है।










रिपोर्ट एवं तस्वीरें

यू.बी.एम. चर्च, मानसून मिशन

यू.बी.एम. आउटरीच विभाग

यू.बी.एम. के आउटरीच विभाग ने मानसून से प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए जरूरतमंद लोगों को तिरपाल वितरित करने की पहल की। यह राहत कार्य समुदाय की सेवा करने तथा करुणा, संवेदना और मसीह के प्रेम के साथ जरूरतमंदों की देखभाल करने की यू.बी.एम. चर्च की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
















धन्यवाद

Email : ubmcmagazine@gmail.com

Website : www.ubmchurches.com

Contact no : 8105-349-008 / 8108- 094-057 / 8767-756-165